21वीं सदी में स्त्रियों द्वारा लिखित हिंदी यात्रा-वृत्तांत
(परिचयात्मक इतिहास एवं दो चयनित पुस्तकों का तात्त्विक विश्लेषण)

HIN-675 शोध प्रबंध

श्रेयांक: 16

स्नातकोत्तर कला (हिंदी)

की उपाधि हेतु प्रस्तुत लघु शोध प्रबंध

शोधार्थी

सैयोनी दिलीप नाईक

अनुक्रमांक: 22P0140028

PR Number: 201901330

मार्गदर्शक

मनिषा गावडे

शणै गोंयबाब भाषा और साहित्य संकाय

हिंदी अध्ययन शाखा

गोवा विश्वविद्यालय

अप्रैल 2024

परीक्षक:

Seal of the School

DECLARATION BY STUDENT

I hereby declare that the data presented in this Dissertation report entitled, **21वीं सदी में स्त्रियों द्वारा लिखित हिंदी यात्रा-वृत्तांत** (परिचयात्मक इतिहास एवं दो चयनित पुस्तकों **का तात्त्विक विश्लेषण)** is based on the results of investigations carried out by me in the Discipline of Hindi at **Shenoi Goembab School of Languages and Literature, Goa University** under the Supervision of **prof. Manisha Gaude** and the same has not been submitted elsewhere for the award of a degree or diploma by me. Further, I understand that Goa University or its authorities will be not be responsible for the correctness of observations/experimental or other findings given the dissertation. I hereby authorize the University authorities to upload this dissertation on the dissertation repository or anywhere else as the UGC regulations demand and make it available to any one as needed.

Snaik

Saiyoni Dilip Naik

22P0140028

Date: 22/04/2024

Place: Goa University

COMPLETION CERTIFICATE

This is to certify that the dissertation report **21 वीं सदी में स्त्रियों द्वारा लिखित हिंदी यात्रा-वृत्तांत (परिचयात्मक इतिहास एवं दो चयनित पुस्तकों का तात्त्विक विश्लेषण)** is a bonafide work carried out by **Ms. saiyoni Dilip Naik** under my supervision in partial fulfilment of the requirements for the award of the degree of Master of Arts in the Discipline of Hindi at the Shenoi Goembab School of Languages and Literature, Goa University.

Prof. Manisha Gaude

Professor Anuradha wagle

Dean, SGSLL, Goa University

GOA UNIVERSITY SHENOI GOEMBAB SCHOOL OF LANGUAGES & LITERATURE TALEIGAON PLATEAU

School Stamp

Date:22/04/2024

Place: Goa University

अनुक्रम

अध्याय	विवरण	पृष्ठ संख्या
	Acknowledgements	i
	अनुक्रम	iv
	प्रस्तावना	vi - ix
1	प्रथम अध्याय: यात्रा-वृत्तांत : अर्थ, परिभाषाएं, तत्त्व और इतिहास 1.1 यात्रा: कोशगत अर्थ 1.2 यात्रा-वृत्तांत कोशगत अर्थ एवं परिभाषाएं 1.3 यात्रा-वृत्तांत के तत्त्व 1.4 यात्रा-वृत्तांत विधा का उद्भव एवं विकास	1-19
2	द्वितीय अध्याय: 21वीं सदी में स्त्रियों द्वारा लिखित यात्रा-वृत्तांत: परिचयात्मक इतिहास 2.1 पृष्ठभूमि 2.2 2001 से 2023 तक	20-33
3	तृतीय अध्याय: 'देह ही देश' यात्रा-वृत्तांत का तात्त्विक विवेचन 3.1 स्थानीयता 3.2 तथ्यात्मकता 3.3 आत्मियता	34-52

	3.4 पात्र एवं चरित्रांकन 3.5 रोचकता 3.6 उद्देश्य	
4	चतुर्थ अध्याय: 'बुध्द का कमण्डल लद्दाख' का तात्त्विक विवेचन 4.1 स्थानीयता 4.2 तथ्यात्मकता 4.3 आत्मियता 4.4 चित्रात्मकता 4.5 पात्र एवं चरित्रांकन 4.6 उद्देश्य	53-68
5	उपसंहार	69-71
6	संदर्भ	72-77

प्रस्तावना

यात्रा करना मनुष्य की नैसर्गिक प्रवृत्ति है। अगर हम मानव इतिहास पर नजर डाले तो पाएंगे कि मनुष्य अपने विकास के लिए यात्राएं करता आ रहा है। जैसे-जैसे समाज में परिवर्तन आया वैसे ही मनुष्य के यात्राओं का उद्देश्य बदलता गया। लेकिन जिसके पास सृजनात्मक प्रतिभा होती है, वहीं अपनी यात्रा अनुभवों को पाठकों के सामने प्रस्तुत कर पाता है। लेखक अपने यात्रा-वृत्तांतों में विभिन्न देशों की संस्कृति, मानव जीवन, प्रकृति वर्णन, आदि करता है। यात्रा-वृत्तांतों का उद्देश्य लेखक के अनुभवों को पाठक के साथ बांटना है और पाठकों को विभिन्न समाजों, संस्कृतियों, स्थानों, स्थितियों से परिचित कराना है ।

बिना यात्रा के मनुष्य अपने जीवनयापन की सुविधाओं को नहीं जुटा पाता है। यात्रा करने से मनुष्य का भौगोलिक ज्ञान बढ़ता है, साथ ही वह विभिन्न संस्कृति, लोगों से साक्षात्कार करता है, जिसके कारण वहाँ की संस्कृति, लोक गीत, नृत्य, खान पान, पहनावा आदि से परिचित होता है।

यात्रा करना साहसिक कार्य माना जाता है। और यात्रा करने में हमेशा पुरुषों को प्राधान्य दिया जाता था, और स्त्रियों को घर के काम सौंप दिये जाते थे। जैसे की खाना बनाना, बच्चों को संभालना, चूल्हा-चौका आदि। इस कारण स्त्रियाँ घर पर रहने के लिए बाध्य थी। और पुरुष अपने काम के बहाने यात्राएं कर पाते थे । लेकिन विभिन्न आंदोलनों एवं वैचारिक क्रांतियों ने स्त्री की स्थिति को बदला है जिस कारण महिलाएँ यात्रा भी लगी और अपने अनुभवों को लिपिबद्ध भी करने किया। आज शिक्षा ग्रहण करके अपनी सीमाओं को लांघकर विदेश यात्राएं

की और अपने अनुभवों को पाठकों के सामने रखा।

इस विषय को लेने का कारण यह है कि एम.ए. के द्वितीय वर्ष के पाठ्यक्रम में हिंदी गद्य का इतिहास यह विषय लगाया था और जब हम वह विषय पड़ रहे थे तब मुझे पता चला कि 21वीं सदी में स्त्री द्वारा यात्रा लेखन प्रचुर मात्रा में मिलता है। और तभी से मेरे मन में यह जिज्ञासा उत्पन्न हुई कि मुझे इस विषय के संदर्भ में और जानकारी प्राप्त करनी है। 21वीं सदी के पूर्व स्त्रियों द्वारा यात्राएं उतनी नहीं हुई जितनी 21 वीं सदी में हुई है। और 21वीं सदी में यात्राओं के क्रम कैसे बढ़े फिर किस उद्देश्य से स्त्रियों ने यात्राएं की। उन्हें कौन-कौन सी समस्याओं का सामना करना पड़ा और उनमें यात्राओं के बाद किस प्रकार का बदलाव आया यह जानने के लिए मैंने इस विषय का चुनाव किया है।

शोध का विषय है 21वीं सदी में स्त्रियों द्वारा लिखित हिंदी यात्रा-वृत्तांत (परिचयात्मक इतिहास एवं दो चयनित पुस्तकों का तात्त्विक विश्लेषण) वैसे तो स्त्रियों द्वारा 21वीं सदी में कई सारे यात्रा वृतांत लिखे हैं। पर शोध कार्य पूर्ण करने के लिए समय की मर्यादा होने के कारण मैंने दो ही यात्रा-वृत्तांत लिए है। एक गरिमा श्रीवास्तव का 'देह ही देश' और कृष्णा सोबती का 'बुद्ध का कमण्डल लद्दाख़'।

प्रथम अध्याय में यात्रा का कोशगत अर्थ और यात्रा-वृत्तांतों की परिभाषाओं को प्रस्तुत किया है। और यात्रा-वृत्तांत के तत्त्वो पर भी चर्चा की है, साथ ही यात्रा-वृत्तांत के उद्भव एवं विकास पर भी चर्चा की गयी है। जैसे किस प्रकार यात्रा-वृत्तांत विधा की स्थापना हुई किन-किन लेखकों ने इसे समृद्ध बनाने में कदम उठाए आदि का अध्ययन किया गया है।

दूसरे अध्याय में 21वीं सदी के स्त्रियों द्वारा लिखे गये हिंदी यात्रा-वृत्तांत का संक्षिप्त परिचय

दिया है। और साथ ही 21वीं सदी की पृष्ठभूमि को समझकर इन यात्रा-वृत्तांतों की सूची दी है।

तीसरे अध्याय में गरिमा श्रीवास्तव का यात्रा-वृत्तांत 'देह ही देश' का तत्त्वों के आधार पर विवेचन किया है। वहाँ के समाज, इतिहास, वहाँ का रहन-सहन फिर कैसे भारत और वहाँ की संस्कृति में अलगाव है आदि विषयों का विवेचन किया है। फिर वहाँ के युद्ध पिडित स्त्रियों, बच्चों पर जो परिणाम हुए हैं उसका तात्त्विक विवेचन किया है।

चतुर्थ अध्याय में कृष्णा सोबती का यात्रा-वृत्तांत 'बुद्ध का कमण्डल लद्दाख़ जो एक प्रकृति परक यात्रा-वृत्तांत है जिसमें लेखिका ने लद्दाख़ के यात्रा के दौरान हुए अनुभवों का विवरण प्रस्तुत किया है। इस अध्याय में वहाँ के संस्कृति, बौद्ध धर्म, प्रकृति के विविध रंगों आदि का तत्त्वों के आधार पर विश्लेषण किया है।

अंत में उपसंहार है जहाँ मैंने अध्ययन के सार को निष्कर्ष के रूप में प्रस्तुत किया है। आशा है कि इस शोध कार्य का जो संदेश है वह पाठकों तक पहुचे और हिंदी साहित्य के क्षेत्र में लाभदायक रहे।

इसमें प्रत्येक अध्याय के अंत में मैंने अपना निष्कर्ष रखा है। जो इस अध्याय को मौलिक और स्पष्ट करता है। इस अध्ययन कार्य को पूर्ण करने के लिए जिन भी पुस्तकों, आलेखों , वेबसाईट, वीडिओज़, आदि की सहायता ली है उनका अंत में संदर्भ दिया है।

गोवा विश्वविद्यालय के हिंदी विभाग के अध्यापकों का मैं आभार व्यक्त करती हूँ। जिन्होंने मुझे यह अध्ययन कार्य पूर्ण करने में सहायता की। साथ ही मेरी निर्देशिका सहायक प्राध्यापिका मनिषा गावडे जिन्होंने मुझे हर पडाव पर सहायता और मार्गदर्शन किया। साथ ही नम्रता से मेरी हर एक गलती को सुधारा इसलिए मैं आपका धन्यवाद करती हूँ, जिनके बिना यह

अध्ययन कार्य संपन्न नहीं हो पाता।

गोवा राज्य के केंद्रीय पुस्तकालय एवं गोवा विश्वविद्यालय के पुस्तकालय और वहाँ काम करने वाले सभी कर्मचारियों कि मैं आभारी हूँ। खासकर विभव मार्शेलकर जिन्होंने मुझे वहाँ पुस्तकें ढूंढने के लिए और प्रिंट-आउट निकालने में मेरी बहुत सहायता की है।

मैं मेरे माता-पिता की बहुत आभारी हूँ जिन्होंने मुझे मानसिक, आर्थिक तरीके से सहायता की और मेरा मनोबल बढ़ाया। मैं मेरे दोस्त मंथन नाईक, बेबीनंदा शेटकर, और मेरे सहपाठियों की आभारी हूँ जिन्होंने मुझे प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप में सहायता की और यह कार्य संपन्न कराने के लिए मुझे प्रोत्साहित किया।

- सैयोनी नाईक

प्रथम अध्याय

यात्रा-वृत्तांत: अर्थ, परिभाषाएं , तत्त्व और इतिहास

प्रथम अध्याय

यात्रा-वृत्तांत: अर्थ, परिभाषाएं , तत्त्व और इतिहास

यात्रा-वृत्तांत एक ऐसी विधा है जो आज के समय में एक लोकप्रिय विधा बन गयी है। आज हर एक व्यक्ति अपने यात्रा अनुभवों को लिपिबद्ध कर रहा है और इस विधा ने हिंदी जगत में कई सारे लेखकों को समृद्ध बनाया है। तो इस विधा को समझने के लिए हमें इसका इतिहास जान लेना होगा, यात्रा का अर्थ जान लेना होगा, फिर कैसे यात्रा-वृत्तांत पर्यटन किताबों से अलग है? इन बातों को समझने के बाद यात्रा-वृत्तांत को लेकर हमारा ज्ञान भंडार और विस्तृत होगा।

1.1 यात्रा : कोशगत अर्थ

मनुष्य का जीवन एक यात्रा ही है। क्योंकि भारतीय संस्कृति में यह मान्यता है कि एक आत्मा को मोक्ष प्राप्त करने के लिए कई सारे जन्म लेने पड़ते हैं, और उसके कर्मों के तहत उसे अंततः मोक्ष की प्राप्ति होती है, तो यह एक प्रकार से आत्मा की यात्रा ही है। और जब एक आत्मा धरती पर मनुष्य जन्म लेता है तब उसकी जीवन यात्रा का प्रारम्भ होती है। उस जीवन में वह कई सारी यात्राएं करता है। बिना यात्रा के मनुष्य का जीवन अधूरा है। यात्रा के कही सारे उद्देश्य हो सकते है जैसे आजीविका, युद्ध, धर्म प्रचार-प्रसार, मनोरंजन आदि कई सारे उद्देश्य है। जैसे महात्मा गौतम बुद्ध ने ज्ञान, धर्म फैलाने के लिए कही जगहों का भ्रमण किया। ऐसे कहीं सारे व्यक्तित्व

हमारे सामने हैं जिन्होंने यात्राएं की और इतिहास में अपना नाम दर्ज किया। जैसे सिकंदर, वास्को-द-गामा, गुरु नानक, संत नामदेव आदि।

यात्रा तो सभी करते हैं, पर कुछ कम ही लोगों के पास उन यात्रा अनुभवों को लिखने की क्षमता होती है। जो व्यक्ति यात्रा साहित्य की रचना करता है ,वह हर एक जगह को अपने दृष्टि से देखने का प्रयास करता है। और जो घटनाएं यात्रा के दौरान घटी है, उसे रोचक ढंग से पाठक के सामने रखता है। और यह कार्य करना सबके बस की बात नहीं है। जिसके पास भाषा का ज्ञान होता है, लिखने की क्षमता होती है, हर एक चीज़ को देखने परखने की अलग दृष्टि होती है, वहीं साहित्य की रचना कर सकता है।

1.1 यात्रा: कोशगत अर्थ

डॉ. नगेन्द्रनाथ बसु के अनुसार "यात्रा शब्द की व्युत्पत्ति 'या + ष्ट्रन', या धातु मे ष्ट्रन प्रत्यय लगाकर हुई है।" [1]

यात्रा के लिए अलग-अलग नामों का प्रयोग किया जाता है। जैसे सफर, सैर, दौरा, भ्रमण, प्रस्थान, ट्रैवल, जाना, गति, प्रवास, जात्रा, प्रयाण, सैयाही ही आदि।

हिंदी साहित्य ज्ञानकोश में यात्रा शब्द का अर्थ कुछ इस प्रकार स्पष्ट किया है। " यात्रा-सफर; एक स्थान से दूसरे स्थान तक जाने की क्रिया, और जो व्यक्ति यात्रा करता है उसे मुसाफिर, भ्रमणकारी, यात्रा करनेवाला आदि से संबोधित किया है।"[2]

लोकभारती बृहत् प्रामाणिक हिंदी कोश में यात्रा का अर्थ स्पष्ट करते हुए आचार्य रामचन्द्र वर्मा लिखते है " एक स्थान से दूसरे दूरवर्ती स्थान तक जाने की क्रिया, सफर। धार्मिक उद्देश्य या भक्ति से पवित्र स्थान पर दर्शन, पूजा आदि के लिए जाना।" [3]

वर्धा हिंदी शब्दकोश में यात्रा का अर्थ कुछ इस प्रकार है। " यात्रा :1.एक स्थान से दूसरे स्थान पर जाने की क्रिया; सफर 2. प्रस्थान, 3. उत्सव 4. व्यवहार 5. बंगला में प्रचलित एक नाटक।"[4]

हिंदी शब्दसागर के अनुसार "यात्रा – 1.एक स्थान से दूसरे स्थान पर जाने की क्रिया। सफर। 2. प्रयाण। प्रस्थान। 3. दर्शनार्थ देवस्थानों को जाना। तीर्थाटन। 4. उत्सव। 5. निर्वाह। व्यवहार। 6. बांग्लादेश में प्रचलित एक प्रकार का अभिनय जिसमें नाचना और गाना भी रहता है। यह प्रायः रासलीला के ढंग का होता है। 7. युध्द यात्रा।" [5]

उपर्युक्त शब्दकोशों के अनुसार यात्रा के दो अर्थ निकलते है। पहला एक जगह से दुसरी जगह जाना, भ्रमण करना फिर चाहे वह तीर्थयात्रा, युद्धयात्रा या अन्य यात्रा स्थल भी हो सकता है। इन

शब्दकोशों के अनुसार यात्रा का और एक अर्थ सामने आता है, वह है बंगला में एक नाटक प्रस्तुत किया जाता है जिसे यात्रा कहा जाता है।

1.2 यात्रा-वृत्तांत का कोशगत अर्थ एवं परिभाषाएं

यात्रा-वृत्तांत यानी जब कोई व्यक्ति यात्रा करता है और अपने अनुभवों का कलात्मक एवं साहित्यिक विवरण प्रस्तुत करता है उसे यात्रा-वृत्तांत कहा जाता है। कही सारे विद्वानों ने यात्रा-वृत्तांत की परिभाषाएं प्रस्तुत की है।

वर्धा हिंदी शब्दकोश में यात्रा-वृत्तांत का अर्थ कुछ इस प्रकार है। " यात्रा-वृत्तांत: यात्रा का विवरण या वर्णन।" [6]

हिंदी का यात्रा-साहित्य एक विहंगम दृष्टि के भूमिका में विश्वमोहन तिवारी का कथन कुछ इस प्रकार है। " यात्रा और कहानी मानव के आदिम इतिहास के जुडवां भाई- बहन है। यात्रा-वृत्तांत में यात्रा और कहानी मिलकर एक हो जाते है वैसे ही जैसे एक लाख वर्ष पुर्व पाशाण युग के मानव समुदाय में भी हो जाया करते थे। यात्रा सभ्यता की उपज नहीं है ,बल्कि कुछ सीमा तक यह कहना होगा कि सभ्यता, संस्कृति और विकास भी यात्रा की उपज है।" [7]

हिंदी साहित्य ज्ञानकोश में यात्रा-वृत्तांत की परिभाषा कुछ इस प्रकार है । " यात्रा-वृत्तांत किसी व्यक्ति-विशेष के जीवन में घटित यात्रा संबंधित किसी घटना का साहित्यिक चित्रण होता है । इसमें स्थानीयता तथा तथ्यात्मकता होती है । यहाँ कल्पना की गुंजाइश नहीं होती । इसमें बीते हुए यथार्थ का वर्णन होता है । इसमें आत्मीयता, वैयक्तिकता, कल्पनाशीलता और रोचकता होती है । यात्रा-वृत्तांत में किसी खास जगह के संपूर्ण वैभव, प्राकृतिक सौंदर्य, रीती-रिवाज रहन-सहन, आचार-विचार, मनोरंजन के तौर तरीके, जीवन के प्रति दृष्टिकोण आदि का चित्रण होता है ।" [8]

ऑक्सफ़ोर्ड डिक्शनरी में ट्रैवलॉग का अर्थ कुछ इस प्रकार दिया है " a film , book, or talk about a person's ttravel " [9]

ब्रिटानिका डिक्शनरी: "travelogue: speech,movie, or piece of writing about someone's experiences while traveling." [10]

ट्रेवल राइटिंग वर्ल्ड में यात्रा-वृत्तांत का अर्थ कुछ इस प्रकार दिया है । "A travelogue is a truthful account of an individual's experiences traveling, usually told in the past tense and In the first person. "[11]

प्रकृति वर्णन, तथ्यों के साथ जगहों की जानकारी, फिर अलग-अलग देशों, जगहों के संस्कृति को समझने का मौका हमें अन्य कथेतर गद्य की तुलना में यात्रा साहित्य में अधिक मिलता है। और यह **सुरेन्द्र माथुर** के कथन से स्पष्ट होता है। वे कहते हैं : "अन्य विधाओं में प्रकृति चित्रण मिलता है पर यात्रा साहित्य का मूल ढांचा प्रकृति के वर्णन पर खड़ा होता है।"[12]

अतः यात्रा वृतांत एक ऐसी विधा है जहाँ हमें जगहों की जानकारी के साथ-साथ वहाँ के लोगों को समझने का मौका मिलता है, और उस स्थान के प्रकृति के अलग-अलग रंग हमें यात्रा-वृत्तांत में देखने को मिलते हैं। इस प्रकार कई सारे विद्वानों ने अपने अनुभवों से यात्रा-वृत्तांत की परिभाषा दी है। इन परिभाषाओं को पढ़ाकर यह लगता है कि जो अंग्रेजी शब्दकोश है उनमें जो यात्रा-वृत्तांत का अर्थ दिया है वह व्यापक है वही हिंदी में यात्रा-वृत्तांत का अर्थ सीमित है जैसे अंग्रेजी के स्पीच, फ़िल्म कहा गया है। वही हिंदी के विद्वानों ने इस विधा को प्रकृतिपरक विधा कहा है।

1. 3 यात्रा-वृत्तांत के तत्त्व

यात्रा साहित्य एक ऐसी विधा है जिसमें लेखक अपने यात्रा अनुभवों को तथ्यों, चित्रात्मकता, रोचकता, अपनी अद्भुत भाषा शैली से कलात्मक ढंग से पाठकों के सामने प्रस्तुत करता है। वहाँ के संस्कृति, खान-पान, पहनावा, रीती-रिवाज, इतिहास, भूगोल, प्राकृतिक सौंदर्य आदि सब चीजों का अपने यात्रा साहित्य में बड़े ही रोचक ढंग से प्रस्तुत करता है। यात्राकार द्वारा रचीत यात्रा साहित्य के तत्त्वों को लेकर विद्वानों के अलग-अलग विचार है पर सामान्यतः सभी ने स्थानीयता, तथ्यात्मकता, जागरूकता, आत्मीयता, कल्पनाशीलता, रोचकता, पात्र एवं

चरित्रांकन, भाषा शैली, उद्देश्य इन तत्त्वों को प्राधान्य दिया है। साहित्य के अन्य विधाओं की तरह यात्रा साहित्य के भी तत्व होते हैं जो उसे अन्य विधाओं से अलग करते हैं।

स्थानीयता

स्थानीयता एक ऐसा तत्त्व है जिसके ईद -गिर्द संपूर्ण यात्रा-वृत्तांत घूमता है। लेखक किस स्थान की यात्रा करेंगे यह उस पर निर्भर करता है, और जिस स्थान की यात्रा वह करता वहाँ के संस्कृति, भाषा, खान-पान, प्राकृतिक वर्णन, तीज-त्योहार, समाज एवं वहाँ के लोग आदि यात्रा-वृत्तांत के मुख्य वर्ण विषय होते है। और उस जगह से जुड़े इतिहास और वर्तमान की स्थिति को अपने यात्रा-वृत्तांत के माध्यम से पाठक के समक्ष प्रस्तुत करता है।

तथ्यात्मकता

हिंदी गद्य के अन्य विधाओं में एक सीमा तक तथ्यात्मकता से बचा जा सकता है, पर यात्रा साहित्य की प्रमाणिकता उसकी तथ्यात्मकता में ही नहीं है, लेखक जिस भी स्थान की यात्रा करता है उस स्थान से जुड़ी ऐतिहासिक जगहों की या वहाँ के लोगों के रहन-सहन की बात आती है। तब लेखक को तथ्यों के साथ उन चीजों का वर्णन करना पड़ता है। और इन चीजों का वर्णन लेखक को इतिहास या भूगोल की किताबों जैसा नहीं करके उसे बड़े रोचक ढंग से प्रस्तुत करना चाहिए।

जागरूकता

जब लेखक यात्रा कर रहा होता है तब उसे जागरूक होने की आवश्यकता है। क्योंकि जब वह किसी घटना या वस्तु का वर्णन करेगा तब इसी जागरूकता की वजह से उन दृश्यों का सही तरह से वर्णन कर पाएगा। और तभी एक उत्कृष्ट यात्रा साहित्य निर्माण होगा।

आत्मीयता

आत्मीयता एक ऐसा रचना तत्त्व है जो लेखक और पाठक के बीच मर्मस्पर्शी संबंध स्थापित करता है। यात्राकार जब यात्रा करता है तब वह उस स्थान से जुड़े लोग, संस्कृति वहाँ का समाज, वस्तु आदि से आत्मीय संबंध स्थापित करता है। इसी वजह से पाठक उन घटनाओं को पढ़ते समय खुद यात्रा कर रहा है ऐसा उसे लगने लगता है, और यह सब आत्मीयता के बिना संभव नहीं है।

चित्रात्मकता

यात्रा-वृत्तांत में चित्रात्मकता एक महत्वपूर्ण भूमिका अदा करती है, जिससे पाठकों के लिए प्रस्तुत यात्रा वर्णन का दृश्य सामने उपस्थित हो जाता है। यात्राकार अपने देखे हुए दृश्यों का चित्र बड़े ही रोचक ढंग से प्रस्तुत करता है, और लेखक का वह वर्णन चित्रों को जीवंतता प्रदान करता है।

अधिकतर प्रकृति-चित्रण मे हमे चित्रात्मकता कि विशेषता नज़र आती है। इस कारण पाठक लेखक के साथ जुड़ाव महसूस करता है ।

कल्पनाशीलता

कल्पनाशीलता के बिना चित्रात्मकता अधूरी है, क्योंकि कल्पनाशीलता एक ऐसा तत्त्व है ,जिसके बिना यात्रा-वृत्तांत अधूरा है। क्योंकि जब लेखक यात्रा-वृत्तांत लिखने बैठता है तब सभी दृश्यों का लेखा जोखा उसके पास नहीं रहता। पर कल्पना क्षमता की वजह से वह देखे हुए दृश्यों का सजीव चित्रण करता है। पर लेखक जब कल्पनाशीलता की सहायता से किसी स्थान वस्तु का वर्णन कर रहा होता है, तब उसे इस बात का ध्यान रखना है कि वह यथार्थ को हानि पहुँचाए बिना उन दृश्यों का वर्णन करें। यदि लेखक इस चीज़ का ध्यान नहीं रखेंगे तो वह अतिशयोक्ति का रूप लेगा।

रोचकता

रोचकता यात्रा-वृत्तांत का मूल तत्त्व है। क्योंकि लेखक जिस प्रकार अपनी रुचि से जिन स्थानों का वर्णन करता है, लेखक वहाँ के इतिहास, संस्कृति, लोगों का रहन-सहन, प्रकृति आदि चीजों का वह इन सभी का रोचकता से प्रस्तुतिकरण करता है। और इसी वजह से यात्रा-वृत्तांत बाकी

पर्यटन पुस्तिकाओं से अलग बनता है। जिससे पाठक के मन में यात्रा-वृत्तांत पढ़ने की जिज्ञासा उत्पन्न होती है।

पात्र एवं चरित्रांकन

कहानी, नाटक, उपन्यास में पात्रो की संख्या निर्धारित की जाती है, पर यात्रा-वृत्तांत में पात्रों की संख्या को लेकर कोई सीमाएं नहीं है क्योंकि, यात्रा के दौरान लेखक का कई सारे लोगों से परिचय होता है और इसमें मुख्य पात्र स्वयं लेखक ही हैं। पात्रों की वजह से यात्रा-वृत्तांत में सजीवता आती है। यात्रा-वृत्तांत में ज्यादातर लेखक के यात्रा अनुभवों की अभिव्यक्ति होती है। साथ ही यात्रा के दौरान नजर आते पहाड़, पर्वत, धार्मिक स्थल, ऐतिहासिक स्थल, झरने आदि जो यात्रा-वृत्तांत को रोचक और अविस्मरणीय बनाते है। वही इसमें कुछ महत्वपूर्ण पात्रों का भी वर्णन मिलता है जो यात्रा के दौरान निरंतर लेखक के साथ जुड़े रहते हैं। कुछ ऐसे भी यात्रा-वृत्तांत है जिसमें युद्ध के दौरान होने वाले अत्याचारों से लढते पात्रों का उल्लेख किसी भी इतिहास की किताबों में नहीं हुआ हैं परंतु उसका वर्णन यात्रा-वृत्तांतों में मिलता है। उन पर हुए अत्याचारों उनकी निजी लढईयां यह सब यात्रा-वृत्तांत में उभर कर आती है। अतः यह स्पष्ट होता है कि गद्य की अन्य विधाओं की भाँति यात्रा-वृत्तांत के पात्र की अवधारणा अलग है और इसमें हर एक पात्र अपनी अलग भूमिका निभाता है।

भाषा शैली

भाषा शैली साहित्य रचना का ऐसा महत्वपूर्ण तत्त्व है जो हर एक रचना को प्रभावशाली बनाता है। भाषा शैली लेखक के व्यक्तित्व को उभरकर लाती है। भाषा शैली के कारण लेखक के निजी अनुभव और भावों की अभिव्यक्ति बेहतर ढंग से होती है। यात्रा साहित्य के लेखक अपने अनुभवों को पाठक के साथ साझा करते हैं इसलिए इसमें क्लिष्ट, कठिन भाषा फिर अलंकारों से बोझिल अथवा विद्वत्तापूर्ण भाषा के बजाय सरल और स्पष्ट भाषा का प्रयोग करना चाहिए। जिसे लेखक की भावनाएँ हर एक वर्ग के पाठकों तक पहुंचे और वह खुद उन बातों को महसूस करें। भाषा शैली के कारण हमारा लेखक के व्यक्तित्व से परिचय होता है। अगर वह कवि हैं तो उसके यात्रा-वृत्तांत में काव्यात्मक भाषा शैली नजर आती हैं। हिंदी यात्रा साहित्य में कई सारी शैलियां हमें नजर आते हैं :

निबंधात्मक शैली

काव्यात्मक शैली

पत्रात्मक शैली

डायरी शैली

रेखाचित्र शैली

रिपोर्ताज शैली

मिश्रित शैली आदि।

उद्देश्य

साहित्यिक रचना का कोई ना कोई उद्देश्य जरूर रहता है। कोई भी साहित्य निरुद्देश्य नहीं होता यात्रा के दौरान भी लेखक का कोई ना कोई उद्देश्य रहता है। यायावर का स्पष्टत: यही उद्देश्य रहता है कि यात्रा के दौरान जिन चीजों, लोगों, स्थानों से जुड़ें अनोखे अनुभवों को पाठक के सामने रखे। ताकि पाठक भी उनके आनंद में सहभागी हो और जब लेखक यात्रा साहित्य की रचना करते हैं तब वह खुद भोगे हुए अनुभवों का फिर से आनंद ले पाता है। एक तरह से पाठक और लेखक का मनोरंजन होता है साथ ही पाठक को उस स्थान के मौखिक साहित्य की भी जानकारी प्राप्त होती है। यात्रा कई सारे उद्देश्य को लेकर की जाती है जैसे धार्मिक, प्राकृति प्रेम से प्रेरित यात्राएं, संशोधन कार्य से प्रेरित यात्राएं, राष्ट्रीय भावना से प्रेरित यात्राएं, मनोरंजन के दृष्टि से की गई यात्राएं, शैक्षणिक यात्राएं आदि। अतः यह कहना गलत नहीं होगा की यात्रा किसी भी उद्देश्य को लेकर हो पर वह लेखक पर निर्भर करता है कि वह किन अनुभवों को पाठकों के सामने प्रस्तुत करना चाहता है। और यात्रा साहित्यि का कोई एक उद्देश्य नहीं रहता है, बल्कि यात्रा साहित्य का उद्देश्य बहुआयामी है।

1.4 यात्रा-वृत्तांत विधा का उद्भव एवं विकास

यात्रा-वृत्तांत लेखन का अब तक एक लंबा इतिहास मिलता है, जिसका प्रारंभ भारतेंदु या उससे पूर्व माना जाता है। भारतेंदु युग से पूर्व कुछ हस्तलिखित ग्रंथ प्राप्त हुए थे, और इस युग को 'सुरेन्द्र माथुर ने हस्तलिखित ग्रंथ का युग माना है।[13]

भारतेंदु युग में यातायात के साधन बढ़ने लगे फिर डाकघर , प्रेस के आगमन से व्यक्ति के विचारों को अभिव्यक्त करने की सुविधा प्राप्त हुई। इस युग के प्रारंभ में यात्रा साहित्य छुटमुट लेखों, निबंधों में मिलता है। फिर जब मुद्रण काल विकसित होने लगा तब कई सारे लेख, निबंध ,पत्र- पत्रिकाओं में प्रकाशित होने लगे और धीरे-धीरे यात्रा के ग्रंथ मुद्रित हुए। जो पहला यात्रा साहित्य का ग्रंथ मुद्रित रूप मे सामने आया वह है 'लंदन यात्रा' जो हरदेवी जी द्वारा लिखित था। मुरारीलाल शर्मा के अनुसार "भारतेंदु युग में यात्रा साहित्य की नींव पड़ी थी। लेकिन इस युग में कलात्मक एवं साहित्यिक स्तर पर वर्णन प्रधान रहा। इस युग में देशी और विदेशी दोनों यात्राओं का विवरण हमें मिलता है।"[14] भले ही यात्रा साहित्य को इस युग में विधा के रूप में स्थान नहीं मिला हो पर हम कह सकते हैं कि इस युग में हिन्दी यात्रा साहित्य को एक दिशा मिली।

द्विवेदी युग में सरस्वती पत्रिका का प्रकाशन हुआ, और उसके पहले अंक में ही कश्मीर- यात्रा नाम से यात्रा विवरण प्रकाशित हुआ था। इसके बाद अन्य पत्र पत्रिकाओं में भी यात्रा साहित्य प्रकाशित होने लगा जैसे इंदु, चित्रमय, जगत् और गृहलक्ष्मी। मुरारीलाल शर्मा कहते हैं कि "द्विवेदी युग में भी यात्रा साहित्य का विकास निबंधों की शैली में हुआ।"[15] इस युग में विषय में

व्यापकता आयी और प्रारंभिक युग के अपेक्षा से इस युग में श्रेष्ठ साहित्यकारों की नज़र इस विधा पर पड़ी जिससे यात्रा साहित्य अधिक लोकप्रिय हुआ।

उत्तर द्विवेदी युग को सुरेन्द्र माथुर ने वायुयान युग कहा है। क्योंकि इस युग में जो यात्राएं हो रही थी वह ज्यादातर वायुयान से ही हो रही थी। उस समय प्रथम विश्वयुद्ध शुरू होने के कारण वायुयान का पहला इस्तेमाल युद्ध में तोहफे के गोले सही जगह पर फेंकने के लिए किया जाता था। बाद में जब प्रथम विश्वयुद्ध खत्म हुआ तब वायुयान से यात्राएं प्रारंभ हुई और यात्रा साहित्य में बढ़ोतरी हुई जिसके कारण इस युग में विदेशी पृष्ठभूमि पर लीखें यात्रा-वृत्तांत अधिक मिलते है। इस युग में कुछ श्रेष्ठ यात्राकार उभर कर आए जैसे स्वामी सत्यदेव परिव्राजक जिनके बारे में मुरारीलाल शर्मा का कथन महत्वपूर्ण साबित होता है। "स्वामी जी अपने बाद की पीढ़ी के लिए प्रेरणा स्रोत घुम्मकड़ रहे हैं। उनकी पुस्तक 'यात्री मित्र' विदेशों में भ्रमण करने वालों के लिए निर्देशिका का कार्य करता है।" [16] राहुल सांकृत्यायन ने इस युग में कई सारे विदेश यात्रा अनुभवों को लिपिबद्ध करके हिंदी यात्रा साहित्य को विस्तृत और प्रगतिशील बनाने में महत्वपूर्ण योगदान दिया। वे घुमक्कड़ी को सर्वश्रेष्ठ धर्म मानते हुए कहते हैं कि "मेरी समझ में दुनिया की सर्वश्रेष्ठ वस्तु है घुमक्कड़ी, घुम्मकड़ से बढ़कर व्यक्ति और समाज का कोई हितकारी नहीं हो सकता।" [17]

आज के मुकाबले उनके समय में उतनी यात्रा की सुविधाएं नहीं थी फिर भी उन्होंने अदम्य साहस के साथ कठिनतम् यात्रा की। इसलिए 'काशी की पंडित सभा ने उन्हें वर्ष 1929 में महापंडित की उपाधि प्रदान की थी'। इन लेखकों ने इस युग में ही नहीं बल्कि स्वातंत्र्योत्तर युग में भी हिंदी यात्रा साहित्य में अपना योगदान दिया।

स्वातंत्र्योत्तर युग में यात्रा लेखन में बढ़ोतरी हुई। इस युग में राहुल सांकृत्यायन ने 'घुमक्कड़ शास्त्र' जैसे ग्रंथ की रचना की और भविष्य के घुमक्कड़ों के लिए एक मार्गदर्शक कृति साबित हुई। युवाओं में घुम्मकड़ी का अंकुर पैदा करना ही इस कृति का उद्देश्य रहा है। उन्होंने पुरुषों को ही नहीं बल्कि स्त्रियों को भी घुमक्कड़ी धर्म अपनाने का संदेश दिया है। "घुमक्कड़ी-धर्म ब्राह्मण धर्म जैसा संकुचित धर्म नहीं है, जिसमें स्त्रियों के लिए स्थान नहीं हो। स्त्रियाँ इसमें उतना ही अधिकार रखती है जितना पुरुष। यदि वह जन्म सफल करके व्यक्ति और समाज के लिए कुछ करना चाहती हैं, तो उन्हें भी दोनों हाथों इस धर्म को स्वीकार करना चाहिए। घुमक्कड़ी धर्म छुड़ाने के लिए ही पुरुष ने बहुत से बंधन नारी के रास्ते में लगाये हैं। बुद्ध ने सिर्फ पुरुषों के लिए घुमक्कड़ी करने का आदेश नहीं दिया, बल्कि स्त्रियों के लिए भी उनका वही उपदेश था।" [18] इनसे प्रेरित होकर इस युग में कई स्त्रियों और पुरुषों ने यात्रा लेखन शुरू किया। मुरारीलाल शर्मा का कहना है कि "लेखकों में जहाँ गणना की दृष्टि से इस युग में बढ़ोतरी हुई है, वहीं गुणात्मकता एवं प्रयोग-धार्मिता की दृष्टि से भी बहुविध यात्रा-साहित्य का सर्जन किया गया है। स्वातंत्र्योत्तर युग को हिंदी यात्रा साहित्य का उत्कर्ष काल कहा जा सकता है। भाषा की व्यंजकता एंव सूचनाओं के स्थान पर सौन्दर्य- बोध तथा लेखकीय प्रतिक्रियाओं अथवा लेखक के व्यक्तित्व के प्रतिफल की दृष्टि से स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी यात्रा- साहित्य पूर्वपेक्षा अधिक साहित्यिक है।" [19] अत: कहा जा सकता है कि भारतेंदु युग में यात्रा लेखन की नींव डाली गई थी, और कहीं सारी सुविधाओं में बदलाव आने से स्वातंत्र्योत्तर युग में इसका विकास हुआ। और आगे चलकर यात्रा लेखन की लोकप्रियता बढ़ी।

निष्कर्ष

उपर्युक्त विवेचन से यह बात सामने आती है कि अनेक शब्दकोशों में पाश्चात्य एवं भारतीय विद्वानों ने यात्रा और यात्रा-वृत्तांत की विविध अर्थ और परिभाषाएं दी हैं। तो यह निष्कर्ष निकलता है कि यात्रा का सामान्य अर्थ एक तो किसी भी जगह का भ्रमण करना, फिर चाहे उद्देश्य कोई भी हो। और एक अर्थ है बांग्लादेश में प्रचलित एक प्रकार का अभिनय जिसमें नाचना गाना होता है, जो रासलीला के तरह प्रस्तुत किया जाता है। यात्रा साहित्य ने गद्य के सभी तत्त्वों को अपने अंदर समाहित किया है। वैसे तो यात्रा के कई सारे तत्त्व है परंतु इस अध्याय में यात्रा के अध्ययन की दृष्टि से कुछ महत्वपूर्ण तत्त्वों पर ही बात की है। यात्रा-वृत्तांत के जो तत्त्व है वह अन्य विधाओं से थोड़े अलग हैं क्योंकि, यह एक ऐसी विधा है जिसमें कल्पना का उतना महत्व नहीं है जितना तथ्यात्मकता, भाषा, जागरूकता, स्थानीयता, आत्मियता आदि का है। पात्रों की भी अवधारणा यहाँ अन्य गद्य विधाओं की तुलना में अलग है। और अगर इसके उद्देश्य की बात करें तो यात्रा-वृत्तांत का कोई एक उद्देश्य नहीं है, बल्कि एक ही यात्रा-वृत्तांत में कई सारे उद्देश्य निहित हैं। यदि यात्रा साहित्य के इतिहास पर नज़र डाले तो वह बहुत लंबा है, जिसका प्रारम्भ भारतेंदु से पूर्व मान सकते हैं। पर हिंदी गद्य में यात्रा साहित्य का लेखन भारतेंदु से ही शुरू हुआ जो चंपूशैली में मिलता है। उससे पहले पद्य शैली में ही लिखा जाता था। आगे चलकर इस विधा में और सुधार आया और भारतेंदु युग में जो यात्रा साहित्य की नींव डाली गई थी वह आज आधुनिक युग में और विस्तृत हुई। आज इस विधा में स्वतंत्र लेखन हो रहा है।

संदर्भ सूची:-

1. बसु, श्री नगेद्रनाथ. हिंदी विश्वकोश, विश्वकोश प्रेस, सं 1929 कलकत्ता पृ. 630
2. प्रमुख सं शंभुनाथ. हिंदी साहित्य ज्ञानकोश, भारतीय भाषा परिषद, कोलकाता पृ. 4
3. आचार्य वर्मा, रामचंन्द्र. लोकभारती बृहत् प्रामाणिक हिंदी कोश, लोकभारती प्रकाशन, 2014 पृ. 760
4. सं प्रकाश, राम. सक्सेना, वर्धा हिंदी शब्दकोश, भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशक,नई दिल्ली, दूसरा संस्करण 2015 पृ. 975
5. दास, श्यामसुंदर . हिंदी शब्दसागर, नागरी मुद्रण वाराणसी पृ. 4067
6. सं प्रकाश, राम. सक्सेना, वर्धा हिंदी शब्दकोश, भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, नई दिल्ली, दूसरा संस्करण 2015 पृ. 976
7. तिवारी, विश्वमोहन.हिंदी का यात्रा साहित्य एक विहंगम दृष्टि, आलेख प्रकाशन, दिल्ली, प्रथम संस्करण 2004 पृ. (भुमिका)
8. सं शंभुनाथ, हिंदी साहित्य ज्ञानकोश, भारतीय भाषा परिषद, कोलकात्ता, पृ. 3011
9. Edited hawker sara, little Oxford English Dictionary,Oxford University press, ninth edition pg.749
10. https://www.britannica.com/dictionary/travelogue
11. https://www.travelwritingworld.com

12. माथुर, सुरेन्द्र. यात्रा साहित्य का उद्भव और विकास, साहित्य प्रकाशन दिल्ली, 1962 पृ. 4

13. डॉ. शर्मा, मुरारीलाल. हिंदी यात्रा साहित्य: स्वरूप और विकास, हिंदी यात्रा साहित्य क्लासिकल पब्लिशिंग कंपनी,नई दिल्ली, प्रथम संस्करण 2003 पृ.34, 35

14. वही पृ. 38

15. वही पृ.39

16. वही.44

17. सांकृत्यायन, राहुल. घुम्मकड़ शास्त्र, किताब महल इलाहाबाद, संस्करण 1992 पृ.7

18. वही पृ.9

19. शर्मा, डॉ.मुरारीलाल . हिंदी यात्रा साहित्य: स्वरूप और विकास, क्लासिकल पब्लिशिंग कम्पनी, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण 2003 पृ.64, 65

द्वितीय अध्याय

21वीं सदी में स्त्रियों द्वारा लिखित हिंदी यात्रा-वृत्तांत : परिचयात्मक इतिहास

द्वितीय अध्याय

21वीं सदी में स्त्रियों द्वारा लिखित हिंदी यात्रा-वृत्तांत : परिचयात्मक इतिहास

2.1 पृष्ठभूमि

यात्रा करना एक साहसिक कार्य माना जाता है। और यात्रा करने में हमेशा से पुरुषों को प्राधान्य दिया जाता था ,और स्त्रियों का जीवन रसोईघर तक सीमित रखा जाता था। पर आने वाले समय में स्त्रीयों ने इस धारणा को तोड़ कर परिवार का ध्यान रखने के साथ-साथ अपने समाज में अपनी पहचान बनाई है। शिक्षा के कारण अब उनमें काफी बदलाव आया है। नारी अपने भोगे यथार्थ या समाज में घटित सभी विषयों पर अपनी लेखनी चला रही है। साहित्य के हर एक विधा में उसका स्वतंत्र अस्तित्व है। कही जगहों की यात्रा करने के साथ ही उसने अपने यात्राओं के अनुभवों को शब्दों का रुप दिया है।

हम हिंदी के स्त्री यात्रा साहित्य पर नज़र डालें तो सं 1609 मैं श्रीमती जीवन जी की माँ द्वारा हस्तलिखित ग्रंथ 'वन यात्रा' मिलता है। जिसकी चर्चा सुरेन्द्र माथुर ने अपनी किताब में की है। [1] डॉ.मुरारीलाल शर्मा इस हस्तलिखित ग्रंथों को लेकर कहते हैं कि जो हस्तलिखित ग्रंथ है वो ब्रज भाषा में लिखे गए थे और इन यात्रियों का उद्देश्य धार्मिक था। इन यात्रा ग्रंथों में अधिकतर यात्राएं मथुरा वृंदावन के आसपास के जगहों पर हुई। [2]

उसी प्रकार लेखिका अयोध्या नरेश बख्तावर सिंह की पत्नी द्वारा लिखित ‘बद्रीयात्रा-कथा ग्रंथ’ का निर्माणकाल सं 1888 है। और यह दूसरा स्त्री यात्रा ग्रंथ है जो चंपूशैली में मिलता है। और जो इसकी मुख्य प्रति है वह खंडित है इसलिए इसके लिपिकाल का कोई पता नहीं चलता।[3]

भारतेंदु युग में यातायात के साधन में वृद्धि आयी, जिसके कारण यात्राएं करने में कोई असुविधा नहीं थी। इसी युग में गद्य का विकास हुआ। हिंदी साहित्य के गद्य और अन्य विधाओं में लेखन शुरू हुआ। इस युग मे कुछ यात्रा विवरण पत्रिकाओं में छपे इसके संदर्भ में स्वाति चौधरी अपने आलेख में लिखती है कि “ हिन्दी पत्र-पत्रिकाओं में अनेक यात्रा लेख प्रकाशित हुए। ऐसे ही कुछ लेख इस प्रकार हैं- गृहलक्ष्मी पत्रिका में प्रकाशित ‘युद्ध की सैर’ जिसमें युद्ध की समाप्ति पर युद्ध क्षेत्र की विनाशात्मक स्थिति का चित्रण किया गया है, श्रीमती सत्यवती मलिक की ‘कश्मीर की सैर’ और ‘अमरनाथ यात्रा’ आदि।” [4]

ब्रिटिशराज के आने के बाद नई आर्थिक व्यवस्था, पाश्चात्य शिक्षा, नई जीवन पद्धति इसका परिणाम भारत देश पर हुआ। इस युग में रूढ़िवादी धारणाएं प्रथाएँ जैसे की सती प्रथा, बाल विवाह, भ्रूण हत्या, पर्दा प्रथा आदि का खंडन किया। और स्त्री शिक्षा पर ज़ोर दिया। उस समय ज्यादातर उच्च घराने या शिक्षित परिवार की स्त्रियां ही शिक्षण प्राप्त कर सकी क्योंकि उनके परिवार के पुरुषों को शिक्षा का महत्व पता था। तो उन्होंने अपनी बेटियों को पढ़ाया। कई स्त्रियां उच्च शिक्षण प्राप्त करने के लिए विदेश में गई उन्हीं में से एक है, ‘हरदेवी जी’ जो उच्च शिक्षा प्राप्त करने के लिये लंदन गयी और उत्तर भारत से शिक्षा के उद्देश्य से जाने वाली पहली महिला थीं जिन्होंने अपने यात्रा अनुभवों को लिखित रूप में प्रस्तुत किया। डॉ.मुरारीलाल शर्मा के

अनुसार " हिंदी यात्रा साहित्य का प्रथम प्रकाशित ग्रंथ हरदेवी जी कृत लंदन यात्रा माना जो ओरियण्टल प्रेस लाहौर से सन् 1883 ई. में प्रकाशित हुई थी।" [5] गरिमा श्रीवास्तव अपने आलेख में लिखित है। " उन्होंने 'लंदन यात्रा' और 'लंदन जुबली' शीर्षक से वृत्तांत लिखे हैं। उन्होंने वह यात्रा अपने भाई और उनकी पत्नी के साथ की थी। यात्रा के दौरान वे निरंतर अपनी देश-भगिनियों की दशा के बारे में चिंतित हैं, इसे आत्म के परिविस्तार के तौर पर देखा जाना चाहिए। तत्कालीन समाज के यथार्थ चित्र उनके यात्रा-वृत्तान्त में हमें मिलते हैं। अपनी भगिनियों की दशा का चित्रण करके वे वस्तुतः भारतीय समाज में अशिक्षा और परदे को स्त्री की दुर्दशा के मूल कारणों के रूप में पहचानती हैं। जहाँ तत्कालीन समाज सुधारक कहीं भी स्त्री -पुरुष समानता की बात नहीं कर रहे थे वही हरदेवी बताती हैं कि स्त्रियों के शिक्षित होने से अज्ञान से ज्ञान की ओर बढ़ने के लिए स्त्रियों को निजी प्रयास करने होंगे। पितृसत्तात्मक समाज-व्यवस्था में पुरुष वर्चस्व को कमज़ोर करने का काम वे लिखकर कर रहीं हैं, जबकि उन्नीसवीं सदी के समाजसुधारक कहीं भी स्त्री पुरुष समानता की बात नहीं करते थे, क्योंकि उन्हें मालूम था कि स्त्री शिक्षा के बगैर स्त्री समानता की बात व्यर्थ है। हरदेवी जी ने स्त्री समानता की बात की है। आमतौर पर स्त्रियों को कमजोर समझा जाता है। और यह मान्यता है कि, स्त्रियां यात्रा के कष्ट सहन नहीं कर सकती। पर हरदेवी जी ने इस यात्रा के बहाने कई सारी चुनौतियों का सामना किया खान-पान रहन सहन स्वास्थ्य संबंधी चुनौतियां भाषा तथा संप्रेषण आदि इससे यह ज्ञात होता है कि वहाँ स्त्री होते हुए भी उन्होंने इन चुनौतियों का सामना किया।"

बींसवीं सदी के महिला लेखन की बात करें तो महिलाओं ने सिर्फ शिक्षा ही ग्रहण नहीं की परंतु स्वतंत्रता संग्राम में भी अपना योगदान दिया और स्त्री शिक्षा के मुद्दों पर भी अपनी लेखनी चलाई जैसे पर्दा प्रथा अमला देवी ने 'हृदय पर का पर्दा हटाओ' निबंध लिखा फिर मद्रास के विदुषी नाम से लेखिका ने निबंध लिखा जिसका शीर्षक था ' विवाहित पर्दानशील स्त्रियाँ क्या करें?', ' क्या शिक्षित कन्याएं भार स्वरूप है?' इस प्रकार लेखिकाओं ने अपने विचारों को लेख, निबंध आदि के रूप में अभिव्यक्त किया ।[7] और आगे चलकर स्वतंत्र्योत्तर युग में यात्रा-वृत्तांत इस विधा में स्वतंत्र लेखन होता रहा जहाँ स्त्रियों ने भी अपना योगदान दिया जो उल्लेखनीय हैं विमला कपूर कृत – अनजाने देशों में(1955), "उन्होंने इसमें इंग्लैंड, स्विट्जरलैंड, इटली, पोलैंड, चौकोंस्लोवाकिया का यात्रा चित्रण किया ।" [8]

पद्मा सुधि – अलकनंदा के साथ साथ(1965),दुर्गावती सिहं कृत सिधी सदी यादे (1976) , अमृता प्रीतम कृत – इकी पत्तियाँ दा गुलाब (1976), पुष्पा भारती कृत सफर सुहाने (1994),पद्मा सचदेव कृत मैं कहती हूँ आखिन देखी (1995) , निर्मला अग्रवाल कृत महंगी रोटी सस्ते लोग(2000)

अतः भारतेंदु युग के बाद सिधे स्वातंत्र्योत्तर युग में स्त्री यात्रा लेखन में बढ़ोत्तरी हुई है। ज्यादातर स्त्रियों ने उत्तर भारत और पूर्वोत्तर भारत में और विदेश में भी यात्राएं की हैं।

2.2 2001 से 2023 तक

21वीं सदी की स्त्री सिर्फ़ देश में ही नहीं अपितु विदेशों में भी स्वतंत्र रूप से एकल यात्रा करने लगी है। और यात्रा ही नहीं बल्कि अपने यात्रा अनुभवों को पुस्तक के रूप में पाठकों के सामने रख रही है। आज स्त्री लेखन में वृद्धि आयी है। ऐसी कहीं सारी लेखिकाऐ है जैसे कृष्णा सोबती, गगन गिल, नासिरा शर्मा, मधु कंदरिया, अनुराधा बेनिवाल, कुसुम खेमानी, आदि।

नासिरा शर्मा कृत 'जहाँ फौव्वारे लहू रोते है' यह वाणी प्रकाशन से 2003 में प्रकाशित हुई। "उनकी यात्रा जापान, पेरिस, लंदन, अफगानिस्तान, पाकिस्तान, इराक से होते हुए कुछ कुर्दिस्तान आदि इन देशों में है।" [9]

मृदुला गर्ग एक प्रसिद्ध कथाकार और उत्कृष्ट यात्रा वृत्तातकार भी है। उनका यात्रा-वृत्तांत ' कुछ अटके कुछ भटके' (2006) में पेंगवीन प्रकाशन से प्रकाशित हुआ।" उन्होंने देश विदेश के यात्रियों की अभिव्यक्ति इस किताब में की है। फिर हिरोशिमा में हुए अणुबम की विभीषिका को प्रस्तुत करने के साथ ही ऐसे बहुत सारे विषयों पर उन्होंने चर्चा की है। " [10]

शिवानी हिंदी की जानी मानी कहानीकार और उपन्यासकार थी। असल में उनका नाम 'गौरव पंत' था, किंतु वे शिवानी नाम से लेखन कार्य करती थी। वे एक पढ़े लिखे घराने से थी उनके पिता शिक्षक थे और उनकी माता भी संस्कृत की विद्वान थी। उनका "यात्रीक" 2007 मैं राधाकृष्णन् प्रकाशन से प्रकाशित हुआ है। [11]

गगन गिल एक रिपोर्टर होने के साथ ही उत्कृष्ट कवियत्री की ख्याति उन्हें प्राप्त हुई है। उनका यात्र-वृत्तांत ‘ अवाक्’ 2008 में वाणी प्रकाशन से प्रकाशित हुआ है। उनका यात्रा-वृत्तांत विश्व की कठिणतम यात्रा स्थलों में से एक माने जाने वाले तीर्थस्थल कैलाश मानसरोवर का यात्रा वर्णन है। अपनी इस पुस्तक में उन्होंने वहाँ के प्राकृतिक सौंदर्य, तिब्बत की संस्कृति, बौद्धधर्म ,उनकी दलाई लामा के प्रति निष्ठा आदि इन बातों को अच्छी तरह से अपने यात्रा-वृत्तांत में अभिव्यक्त किया है।

कुसुम खेमानी का यात्रा-वृत्तांत ‘ कहानी सुनाती यात्राएँ ’ 2012 में राजकमल प्रकाशन से प्रकाशित हुआ। जिसमें उन्होंने अपने अंतर यात्रा के अनुभवों का विस्तार से वर्णन किया है। इस पुस्तक में उनकी हरिद्वार, कश्मीर, उज्जैन ,कोलकाता, शिलांग, गोवा, हैदराबाद, से लेकर उर्बन, रोम, प्राग, मॉरीशस, भूटान और आलास्का की यात्राओं का विवरण है। उन्होंने इन सभी जगहों की लोक संस्कृति को समझने का प्रयास किया।” [11]

हिंदी साहित्य में अपनी वरिष्ठ पहचान रखने वाली कृष्णा सोबती प्रमुखतः एक कथाकार और उपन्यासकार के रूप में प्रसिद्ध है। लेकिन अपने यात्रा-वृत्तांत ‘बुद्ध का कमण्डल लद्दाख़’ के माध्यम से यात्रा साहित्य विधा में योगदान दिया है। उनकी यह पुस्तक 2013 में राजकमल प्रकाशन से प्रकाशित हुई हैं, उन्होंने इस किताब में वहाँ के प्राकृतिक सौंदर्य के साथ ही लद्दाख़ के इतिहास वहाँ की संस्कृति, लोग स्वभाव, बौद्ध धर्म आदि का सुंदर वर्णन हमें इसमें मिलता है। वहाँ आज भी गुरु शिष्य परंपरा कायम है, वहाँ की युवा पीढ़ी विविध क्षेत्रों में ज्ञान अर्जित करने

के साथ ही अपने लोक साहित्य, अपनी परंपराओं को आगे बढ़ा रही है। यह हमें उनके इस यात्रा-वृत्तांत में देखने को मिलता है।

21वीं सदी के यात्रा लेखिकाओं में मधु कांकरिया का नाम गिना जाता है। उनका यात्रा-वृत्तांत 'बादलों में बारूद ' किताबघर से 2014 में प्रकाशित हुआ है। उन्होंने हिमाचल, चेन्नई, लद्दाख ,आसाम, नागालैंड ,मणिपुर, मिज़ोरम, झारखंड ,जैसे जगहों की यात्रा की है। अपने यात्रा के दौरान झारखंड जैसे इलाकों में रहने वाले आदिवासियों के संस्कृति एवं सभ्यता से परिचित हुई। उनकी समस्या को उन्होंने समझा पूंजीपति वर्ग द्वारा आदिवासियों का शोषण फिर विकास के नाम पर वहाँ के प्रकृति को कैसे हानि पहुंचाई है इन बातों को परखने के बाद एक रचनात्मक ढंग से इस यात्रा-वृत्तांत में उन्होंने प्रस्तुत किया है। [12]

अनुराधा बेनीवाल का 'आजादी मेरा ब्रांड' यह किताब राजकमल से 2016 में प्रकाशित हुई थी।यह किताब हरियाणा के उन्मुक्त विचारों वाली भारतीय नारी की आजादी को दर्शाती है। लेखिका ने स्त्री पर समाज द्वारा थोपी गई उन तमाम पाबंदियों को तोड़कर यूरोप के 13 देशों मैं एकल यात्रा की है। इस यात्रा-वृत्तांत में सिर्फ यूरोप यात्रा का वर्णन नहीं है, बल्कि उन्होंने भारत में जो यात्राएं की थीं उनका भी बीच-बीच में पाठकों के साथ अनुभव साझा किए हैं। यूरोप के यात्रा के साथ-साथ वे अपने आंतरिक यात्राओं का भी ज़िक्र करती है। इस यात्रा के दौरान जिन लोगों से वह मिली उनसे उन्होंने वहाँ के राजनीति, संस्कृति, भाषा, इतिहास आदि को समझकर अपने अनुभवों को इस पुस्तक के रूप में प्रकाशित किया है। यह किताब अन्य यात्रा विवरणों की तरह नहीं है जो यात्रा किए हुए स्थलों की संस्कृति का ही वर्णन करता है। बल्कि लेखिका ने

वहाँ के संस्कृत का यहाँ के संस्कृत से तुलना की है और हमारी कमियों को भी उजागर किया है । इस यात्रा-वृत्तांत की भाषा बहुत सरल है और यही वजह है कि आज इस किताब की 11,000 से भी अधिक प्रतियाँ बिक गई है । और इस किताब का अन्य भाषाओं में भी अनुवाद हुआ है जैसे पंजाबी और मराठी । उन्होंने इस किताब के जरिए स्त्रियों को उन्मुक्त होकर समाज के रूढ़िवादी धारणाओं को तोड़कर यात्राएं करने का संदेश दिया है वे लिखती हैं कि ‘‘तुम चलना। अपने गाँव में नहीं चल पा रही तो अपने शहर में चलना। अपने शहर में नहीं चल पा रही तो अपने देश में चलना। अपना देश भी मुश्किल करता है चलना तो यह दुनिया भी तेरी ही है, अपनी दुनिया में चलना। लेकिन तुम चलना। तुम आजाद बेफ़िक्र, बेपरवाह, बेकाम, बेहया होकर चलना। तुम अपने दुपट्टे जला कर, अपनी ब्रा साइड से निकाल कर, खुले फ्रॉक पहनकर चलना। तुम चलना जरूर ! ‘‘उनकी इस किताब को कई नामवंत आलोचकों और लेखकों का स्नेह प्राप्त हुआ है । नामवर सिंह लिखते हैं कि ‘‘हिन्दी साहित्य में अब तक तीन लेखकों के यात्रा-वृत्तांत मील के पत्थर साबित हुए हैं-राहुल सांकृत्यायन जिन्होंने ‘घुमक्कड़शास्त्र’ नाम की किताब ही लिख दी, अज्ञेय और फिर निर्मल वर्मा। इसी कड़ी में चौथा नाम अनुराधा का भी जुड़ रहा है ।’’ [13]

गरिमा श्रीवास्तव की प्रसिद्ध रचना ‘देह ही देश’2017 में राजकमल एंड सन्स से प्रकाशित हुआ । यह यात्रा-वृत्तांत डायरी शैली और पत्र शैली में लिखा है । इसमें 1992 से 1995 के दौरान चले क्रोएशिया सर्बिया के युद्ध में स्त्रियों पर हुए अत्याचारों को केंद्र में रखकर लिखा है । उन्होंने युद्ध और युद्ध के बाद जो परिणाम स्त्रियों पर हुए हैं , उसे दर्शाने का प्रयास किया । इसमें हमें जातीय संघर्ष भी देखने को मिलता है । उसी प्रकार लेखिका की कहानी भारतीय महिलाओं की स्थिति

बताते हुए संयुक्त परिवार पर प्रश्न उठाती है। यह यात्रा-वृत्तांत पुस्तक के रूप में छपने से पहले हंस पत्रिका में ‘ अपराजिताओं के देश में’ इस नाम से उसके कुछ अंश छपे थे। [14]

यशस्विनी पांडेय जी का ‘य से यशस्वीनी य से यात्रा’ यह 2018 में प्रकाशित हुआ था। इसमें कश्मीर से कन्याकुमारी तक के यात्रा अनुभवों को लेखिका ने पाठकों के सामने रखे हैं। जिन प्रांतों का लेखिका ने भ्रमण किया है , वहाँ की संस्कृति, तीज-त्योहारो को गहराइयों से समझने का प्रयास किया है।

मनीषा कुलश्रेष्ठ द्वारा लिखित ‘होना अथिति कैलाश का’ 2019 प्रकाशित हुआ जो उल्लेखनीय है। कैलाश यात्रा का बड़ा ही मार्मिक वर्णन इसमें मिलता है। इसी के साथ कैलाश यात्रा के लिए की जाने वाली शारीरिक तैयारियां ,दवाइयों, बर्फ़ पर चलने के तरीके, कैलाश यात्रा करने के लिए जीतने भी रास्ते हैं उनकी जानकारी के साथ ही भारतीय धर्मों में कैलाश के महत्व के बारे में भी विस्तार से वर्णन किया है।

अनुराधा बेनीवाल का दूसरा यात्रा-वृत्तांत ‘लोग जो मुझमें रह गए’ 2022 में प्रकाशित हुआ। इसमें लेखिका ने भी देशों का या प्रांतों की उन्होंने यात्रा की और जिन लोगों से वे मिली उनके बारे में उन्होंने समझा उन्हें परखा ऐसे कई सारे लोगों से उनका सामना हुआ कहीं लेस्बियन्स, गे , तलाकशुदा आदि जिन्हें हम मुख्यधारा से अलग रखते हैं। उनके जीवन के बारे में इस किताब में उन्होंने लिखा है। साथ ही इस किताब का अनुवाद पंजाबी में हुआ।

जयश्री पुरवार कि रचना ‘अमेरिका ओ अमेरिका’ “ जो दो खंडों में विभाजित है। पहला खण्ड ‘सपनो का शहर सेन फ्रांसिस्को’ जो 2021 में प्रकाशित हुआ।और दूसरा खंड ‘ शहरों को खोजते

कुदरत के गुनते' जो बोधि प्रकाशन से 2022 में प्रकाशित हुआ। इसके पहले अमेरिका जैसे देशों में बहुत सारी यात्राएं हुई है, पर जयश्री पुरवा ने इस देश को नए दृष्टिकोण को लेकर इन जगहों की यात्रा की उन जगहों को नए सिरे से परखने और समझने का प्रयास किया है।" [15]

पल्लवी त्रिवेदी की रचना 'खुशदेश का सफर' 2023 में राजकमल प्रकाशन से प्रकाशित हुआ। "यह किताब भुटान यात्रा पर लिखित है। उनकी यह सामूहिक यात्रा है, जो कि उन्होंने अपने चार दोस्तों के साथ संपन्न की थी। इसमें उन्होंने यात्रा के अलग-अलग पड़ाव का मार्मिक चित्रण किया और रोचक ढंग से पाठकों के सामने प्रस्तुत किया है।" [16]

रश्मि शर्मा का ' झारखंड से लद्दाख' 2023 में प्रभात प्रकाशन से प्रकाशित हुआ। " इसमें झारखंड से लद्दाख के यात्रा का विवरण उत्कृष्ट तरीके से किया है। हिंदी के वरीष्ठ कथाकार उपन्यासकार राकेश कुमार सिंह इस किताब के बारे में कहते हैं " यह किताब संस्मरण और सफरनामे का एक कोलाज हैं"। [17]

निष्कर्ष

अत: 21वीं सदी में स्त्री यात्रा-वृत्तांतों का क्रम बढ़ता नजर आता है। और स्त्रियां आज उन्मुक्त होकर बिना डरे अपने स्वतंत्र विचार समाज में रख रही है। चाहे वह किसी स्थान का कटु सच क्यों न हो पर उसे अपने यात्रा-वृत्तांतों के द्वारा व्यक्त कर रही है। इसका कारण है स्त्री शिक्षित हो गई है और साथ ही आज तकनीक सुविधाओं के कारण जैसी गूगल के एक क्लिक से ही हमें

आज किसी भी वस्तु की जानकारी हमें प्राप्त होती है। साथ ही गूगल मैप जैसी सुविधाओं के कारण यात्रा के दौरान यात्रियों को आज यहाँ वहाँ भटकना नहीं पड़ता। इस प्रकार स्त्रियों ने यात्राएं की और अपने अनुभवों को शब्दों का रूप दिया और उनके इस योगदान की वजह से हिंदी स्त्री यात्रा लेखन में वृद्धि आयी 21वीं सदी के सभी लेखिकाओं ने लेखन की नई शैली अपनाई है। साथ ही कुछ जगहों पर काव्यात्मक भाषा का भी प्रभाव दिखाई देता है। तो हम कह सकते हैं की 21वीं सदी के पूर्व महिलाओं द्वारा ज्यादा यात्रा लेखन नहीं हुआ परंतु 21वीं सदी में महिलाओं के स्थिति में सुधार आने की वजह से उन्होंने यात्राएं की और यात्रा साहित्य में अपना योगदान दिया। जिससे यात्रा साहित्य विकसित होकर प्रगति के पथ पर बढ़ता नजर आता है। 21वीं सदी के स्त्रियों ने समाज में उन पर थोपे गए पाबंदियों को तोड़कर यात्राएं की है।

संदर्भग्रंथ सूची :-

1. माथुर, सुरेन्द्र .यात्रा साहित्य का उद्भव और विकास, साहित्य प्रकाशन, दिल्ली 1926 पृ.86
2. शर्मा, मुरारीलाल. हिंदी यात्रा साहित्य : स्वरूप और विकास, क्लासिकल पब्लिशिंग कम्पनी, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण 2003 पृ. 35
3. माथुर, सुरेन्द्र. यात्रा साहित्य का उद्भव और विकास, साहित्य प्रकाशन, दिल्ली 1926 पृ. 87
4. चौधरी, स्वाति. हिंदी विदेशी – यात्रा साहित्य में महिलाओं का योगदान, अपनी माटी, 28 अक्टूबर 2020
5. शर्मा, मुरारीलाल. हिंदी यात्रा – साहित्य: स्वरूप और विकास,क्लासिकल पब्लिशिंग कम्पनी, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण 2003 पृ. 38
6. श्रीवास्तव, गरिमा. हरदेवी की यात्रा, समालोचना, https://samalochan.com/hardevi/5. https://hindi.news18.com/news/jharkhand/ranchi-travelogue-famous-writer-rashmi-sharma-book-jharkhand-to-ladakh-get-lanched-5654249.html
7. https://www.prabhatkhabar.com/opinion/freedom-story-and-writers-rgj

8. चौधरी, स्वाति. हिंदी विदेशी – यात्रा साहित्य में महिलाओं का योगदान, अपनी माटी, 28 अक्टूबर 2020

9. शर्मा, नासिरा. जहाँ फव्वारे लहू रोते है, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण 2003 (भुमिका)

10. चौधरी, स्वाति. हिंदी विदेशी – यात्रा साहित्य में महिलाओं का योगदान, अपनी माटी, 28 अक्टूबर 2020

11. कुमारी, मीना सुमन. 21वीं सदी की महिला रचनाकारों के यात्रा वृतांतों में लोक- संस्कृति की झलक https://www.socialresearchfoundation.com

12. बांदेय, मधु कंकारिया का जीवन परिचय और रचनाएँ, स्कोटबज, 16 नवंबर 2020 https://www.scotbuzz.org/2020/11/madhu-kankariya-ka-jeevan-parichay.html?m=1

13. बेनीवाल, अनुराधा. अज़ादी मेरा ब्रांड, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, पॉचवा संस्करण 2021

14. श्रीवास्तव, गरिमा. अपराजिताओं के देश में – 2 , हंस पत्रिका, अंक 9, अप्रैल 2017

15. पुरवार जयश्री, अमेरिका ओ अमेरिका , 2 021 (भुमिका)

16. त्रिवेदी, पल्लवी. खुशदेश का सफर , राजकमल प्रकाशन , 2023 (भुमिका)

17. शर्मा, रश्मि. झारखंड से लद्दाख, प्रभात प्रकाशन, 2023(भुमिका)

तृतीय अध्याय

'देह ही देश' का तात्त्विक विश्लेषण

तृतीय अध्याय

‘देह ही देश’ का तात्त्विक विश्लेषण

क्रोएशिया के इतिहास को अगर समझना है, वहाँ की संस्कृति, वर्तमान स्थिति, लोगों को समझना है या फिर वहाँ के स्त्रियों का संघर्ष देखना है, तो उसका ज्वलंत उदाहरण है गरिमा श्रीवास्तव का यात्रा-वृत्तांत ‘देह ही देश’ ।

लेखिका ने क्रोएशिया और बोसनिया में सर्बिया के खिलाफ़ युद्ध में जिन स्त्रियों, बच्चों और मर्दों पर परिणाम हुए और जो विभीषिका उन्होंने झेली उसका उन्होंने वहाँ के एनजीओ, युद्ध पीड़ित व्यक्तियों से मिलकर उनके साक्षात्कार लिए। जो बातें उनके सामने आयीं और जो प्रत्यक्ष उन्होंने अनुभव किया फिर चाहे वहाँ की संस्कृति हो या वहाँ के लोगों का रहन-सहन उसका इस प्रवास डायरी में वर्णन किया है। यात्रा साहित्य के कई सारे तत्त्व है पर जो तत्व इस यात्रा-वृत्तांत में उभर कर आए हैं उन्हीं के आधार पर इस यात्रा-वृत्तांत का मूल्यांकन किया है।

3.1 स्थानीयता :-

यात्रा-वृत्तांत में स्थानीयता से तात्पर्य है कि किसी भी जगह या स्थान की विशेषता। जैसे उस स्थान का खान-पान, वहाँ की संस्कृति, इतिहास, भौगोलिक विशेषताएँ, लोगों के विचार रहन

सहन आदि हो सकता है। लेखिका ने इस यात्रा वृतांत में क्रोएशिया के विभिन्न रंगों को इस डायरी में उकेरा है।

क्रोएशिया के वातावरण की बात करें तो वहाँ जलवायु के तीन प्रकार हैं मेडीटरेनीयन भूभागों में खासकर दक्षिण भाग में सर्दियों में बरसाती मौसम देखने को मिलता है। फिर डिनारीक आल्प्स में सर्दियाँ ठंडी और बर्फीली और गर्मियों में भी ठंड और दोपहर में गरजती बारिश। और उत्तरी मैदानी इलाकों में गर्मियों के दौरान गर्म और ठंडी बर्फीली सर्दियाँ। और जाग्रेब शहर उत्तरी भाग में था जहाँ लेखिका रहती थी। उन्हें वहाँ के फरवरी का मौसम अजीब सा लगने लगा था। क्योंकि भारत में उन्होंने कभी इस मौसम का सामना नहीं किया था। वहाँ अक्सर तापमान शून्य से चार-छह डिग्री कम रहता था। और सूर्य भगवान का तो दर्शन उन्हें कभी कभार होता था। और धूप में भी उन्हें जबरदस्त कापने वाली ठंडी का एहसास होता था। और साथ ही कभी-कभी बर्फीली आँधियाँ चलती थी जिसका कोई अंदाजा भी नहीं लगा सकते थे। [1]

जाग्रेब के वातावरण के अनुसार ही वहाँ का खान पान है। जहाँ ज्यादातर मांसाहारी खाना खाया जाता है। और साथ में वाइन या शराब पीने की उन्हें आदत है। उदाहरण के लिए जब लेखिका अपने मित्रों को दावत के लिए बुलाती है तब वहाँ उनके लिए भारतीय व्यंजन बनाती है क्योंकि वे बड़े चाह से भारतीय व्यंजन खाते है। पर लेखिका ने मदिरा की कोई व्यवस्था नहीं की थी तो उनके मित्र खुद विस्की की बोतल बाहर से ले आते थे। क्योंकि पाश्चात्य देशों में ज्यादातर लोग भोजन के साथ पेय ग्रहण करते हैं। वहीं भारत में भोजन की संस्कृति अलग है। वहाँ सर्दियों में

ठंडा मौसम होने के कारण वे मांसाहारी भोजन और साथ में शराब पीते हैं जिससे उनके शरीर में गर्माहट बनी रहती है l लेखिका वहाँ के खाने से ऊब गयी थी क्योंकि उन्हें वहा के खाने की आदत नहीं थी l वहाँ के होटल का खाना भी उनकी रुचि का नहीं था l इसके संदर्भ में वह कहती थी कि "मांसाहार से परहेज़ की वजह से फ्रूट डबलरोटी और सूप के कुछ नाममात्र विकल्प बचे रहते हैं l" [2]

क्रोएशिया पर्यटन के साथ-साथ वहाँ के मांसाहारी भोजन और प्राचीन तरीके से शराब बनाने की लिए भी प्रसिद्ध है l वहा के " ताजे पानी की मछली, गोमांस, सूअर का मांस और मेडीटेरियन ढंग से बनी सब्ज़ियाँ यहाँ की खासियत हैं। ठंडे मौसम में पशु-मांस के बड़े-बड़े टुकड़ों को लोहे के हैंगरों में टांग दिया जाता है। बंद कमरे में जलती लकड़ियों के धुएँ में वह टंगा मांस पकता है। धुएँ की परत संरक्षक का काम करती है। इसे 'स्मोक्ड मीट' कहा जाता है। इसकी पाकविधि- काफ़ी प्राचीन है और लोकप्रिय भी। जैतून का तेल भी यहाँ काफ़ी प्रयोग होता है l" [3] उसी प्रकार वहा की अखरोट से बनी वाइन भी बहुत प्रसिद्ध है l और उसे भी बनाने की जो प्रक्रिया है वहाँ बहुत प्राचीन है। उस वाइन को वे लोग विशिष्ट अवसरों पर उपहार में देते हैं। उसे नन्हें से ग्लास में डालकर एक घुट में ही पी जाने का रिवाज है l पर उसे बनाने की प्रक्रिया को लेखिका ने इस प्रकार प्रस्तुत किया है l " कच्चे अखरोट के फलों 'ओराहावोक' से बनाया जाता है। कच्चे फलों के टुकड़ों को संतरे और नींबू की पत्तियों समेत पीसकर रेड वाइन या वोडका में मिला, थोड़ी चीनी के साथ चालीस दिनों तक ढंककर रखने से क्रोआती परंपरागत वाइन तैयार होती है। घरों में अक्सर तरह-तरह के फलों से मदिरा बनाई जाती है l" [4]

इसी के साथ समुद्र के किनारे जो लेवेंडुला (लैवेंडर) की झाड़ियां पाई जाती है। उसके पौधे दो से ढ़ाई फुट ऊंचे होते हैं। और लैवेंडर की गंध समुद्र की नमकीन गंध के साथ मिलकर पूरे दक्षिण यूरोप की हवा को नम बनाए रखती है। कीटाणुनाशक सुगंधित लैवेंडर क्रोएशिया और यूरोप के अन्य भागों में निद्राजनित रोग की औषधि है।

क्रोएशिया में कधिकांश लोग क्रोआती में ही बात करते हैं और जो नई पीढ़ी है उन्हें अंग्रेजी आने के कारण वे अंग्रेजी और क्रोआती में सम्प्रेषण करते हैं। इस लिए लेखिका जहाँ पढ़ाती थी वहाँ उन्हें सम्प्रेषण को लेकर ज्यादा परेशानी नहीं आयी। पर जब लेखिका वहाँ के स्थानीय लोगों से बात करने लगी तब उन लोगों को अंग्रेजी न आने के कारण लेखिका को उनसे बात करने में परेशानी हो रही थी।

लेखिका की दोस्त भारत और पाश्चात्य देशों की संस्कृति, संस्कार को लेकर कहती हैं कि " यहाँ देखोगी कि लोग अपनी निर्धनता और कातरता छिपाते फिरते हैं। सबका दर्द एक है पर कोई किसी के दर्द का हिस्सेदार नहीं। तुम्हारे देश में तो ऐसा नहीं न। मैंने भारत में औरतों को बेझिझक आँसू बहाते, पुरुषों को भी बिसूरते देखा है, छाती पीट-पीट कर अपना गम बहाते देखा है, हमारे देश में तो मौत पर भी छिपकर आँसू बहाने का रिवाज है। दफ़नाने के तुरंत बाद चाय-कॉफ़ी, नाश्ते, शराब की व्यवस्था होती है ताकि सगे-सम्बन्धी जल्द-से-जल्द सामान्य हो सकें। तुम्हारे देश में तो तेरह दिनों का लम्बा शोक होता है। जन्म से लेकर मृत्यु तक कितने कर्मकांड-बच्चे की पैदाइश पर कितने आयोजन... नवागत का कितना तो सम्मान ! मैं तो देखती ही रह जाती हूँ तुम्हारी परम्पराओं और संस्कृति को।"[5] भारत में किसी व्यक्ति के मृत्यु के बाद तेरह दिन तक शोक

मनाया जाता है। और मनुष्य के जन्म से लेकर मृत्यु तक कई सारे रस्म और रिवाज होते हैं । जो पाश्चात्य देशों के लोगों को भाते हैं। और इसी वजह से आज भारत देश की संस्कृति को भी वे अपनाने लगे हैं। जैसे महर्षि पतंजलि द्वारा दिया गया योग सूत्र जिसे आज पूरा विश्व अपना रहा है। और एक भारतीय के लिए यह गर्व की बात है। पर दुर्भाग्य से भारतीय युवा पीढ़ी हमारे समृद्ध भारत की संस्कृति को छोड़कर पाश्चात्य संस्कृति अपना रही है जो एक लज्जाजनक बात है।

लेखिका भारतीय महिलाओं की स्थिति बताते हुए संयुक्त परिवार पर प्रश्न उठाती है। उनके बहन की सास पढ़ी लिखी होने के बावजूद भी अपने बहु को काफी सारे बन्दिशों में रखती है। पर उन्हीं के उम्र की औरतें क्रोएशिया में 'सिक्सटी इज नॉटी' इस सिद्धांत को मानती है। वहीं भारत में महिलाओं पर इस उम्र में स्वर्ग में जाने का भूत सवार रहता है। या तो नाना नानी बनने की आस लगाए रहते हैं।

वर्तमान समय में वहाँ के लड़कियों की स्वतंत्रता को लेकर लेखिका कहती हैं कि " भारत की अपेक्षा लड़कियाँ यहाँ ज्यादा स्वतंत्र और उन्मुक्त हैं। नौजवान पीढ़ी भागती-दौड़ती दीखती है। सप्ताह के पाँच दिन यूनिवर्सिटी में पढ़ने वाले छात्र सप्ताहांत में दुकानों के कर्मचारी बन जाते हैं।" [6] जहाँ भारत में इनके आयु की युवा पीढ़ी आज बेरोजगार है। और अपने माता पिता के सहारे जीवन बिता रहे हैं। पाश्चात्य देशों में एकल परिवार होने के कारण यह उन्हें निर्णय की स्वतंत्रता प्रदान करता है। इस प्रकार हमें भारतीय और पाश्चात्य विचारों, संस्कारों, संस्कृति में अलगाव दिखाई देता है ।

इस्लाम पहली बार क्रोएशिया में ओटोमन साम्राज्य द्वारा 15वीं से 16वीं शताब्दी तक चले क्रोएशियाई-ओटोमन युद्धों के दौरान आया था। इस अवधि के दौरान क्रोएशियाई साम्राज्य के कुछ हिस्सों पर कब्ज़ा कर लिया गया, जिसके परिणामस्वरूप कुछ क्रोआती इस्लाम में परिवर्तित हो गए, कुछ को युद्धबंदी बना लिया गया , कुछ को डेवसिरमे प्रणाली इस प्रणाली के तहत वहाँ के बच्चों को जबरदस्ती घर से तुर्की अधिकारी द्वारा लें जाया जाता था। और इस प्रणाली का उद्देश्य था वहाँ के जो बच्चे है उनकी एक सेना बनाई जाए जो परिवार के बजाय उनके लिए वफादार हो इसलिए उनका जबरन इस्लाम में परिवर्तन करके उन्हें कई सारी विद्याओं और कलाओं में उत्तीर्ण किया जाता था। जिसका प्रभाव हम क्रोएशिया के लोकगीत और संगीत में भी देख सकते हैं । " यहाँ के गीतों पर इस्लामिक प्रभाव के साथ-साथ युद्ध और वीरता, मिलन और विरह के भाव प्रमुख हैं। इन लोकगीतों का तर्जुमा अन्य यूरोपीय भाषाओं में हर्डर, गोथे और पुश्किन जैसे नामचीनों ने किया। इस्लामिक प्रभाव से इलाहिजे और कसीदे का प्रचलन यहाँ ज्यादा रहा जो अल्लाह की तारीफ़ में लिखे गए ।"[7]

अगर हम वहाँ के इतिहास पर नजर डालें तो संयुक्त यूगोस्लाविया का विखंडन छे देशों में हुआ और उन छोटे देशों में आपस में 1992 से 1995 में झड़पें हुए। इन झड़पों में सर्बिया और क्रोएशियाई सैनिकों ने राष्ट्रपति मिलोसेविच का ब्रिहत्तर सर्बिया (Greater Serbian) का जो प्लान था की शुद्ध स्वच्छ रक्त वाला सर्बिया और इस योजना को सफल बनाने के लिए बड़े पैमाने पर यातना शिविर खोले। स्कूल और जिम्मेजियम को इन यातना शिविरों में तब्दील किया गया। यहाँ सरेआम परिवार के परिवार नष्ट हुए। कई सारी लड़कियों का कत्ल, सामूहिक बलात्कार

किया गया ।जो स्त्रियां इसके लिए मना करती थी उनकी जिव्हा काट दी जाती थी ताकि वे शोर न करें। फिर उनके हाथ पैर बांध दिए जाते थे जिसके कारण जो उन्हें खाने के लिए रोटियां दी जाती थी वो उन्हें मुँह से ही पकड़नी पड़ती थी। इस दौरान कुछ महिलाओं की मृत्यु हुई क्योंकि वो इतनी यातनाएं सहन नहीं कर पा रही थी। दिन में एक ही बार सर्ब सैनिकों द्वारा नौ बार उन पर बलात्कार किए जाते थे। कुछ महिलाओं का मानसिक संतुलन बिगड़ गया उन्होंने छोटे बच्चियों को भी नहीं बख्शा जिन मासूम जानों ने अभी तक शहर में ठीक तरह से पैर भी नहीं रखे वो भी बलात्कार की शिकार हुई थी। कुछ सैनिकों ने गांवों में जाकर उन्हें परिवार के सामने निर्वस्त्र करके उन पर बलात्कार किए ताकि हर एक क्रोएशिया और बोस्नियाई नागरिको के मन में सर्व के प्रति भय निर्माण हो।बलात्कार स्त्री के स्त्री होने की अस्मिता को ही हनन नहीं करता, समाज में उसके स्तर अस्तित्व पर दाग लगाता है इसके संदर्भ में मृदुला गर्ग कहती है कि " बलात्कार, स्त्री के स्त्री होने की अस्मिता का ही हनन नहीं करता, समाज में उसके स्तर, हैसियत व छवि पर भी प्रश्नचिह्न लगाता है। साथ ही उसके मन में अपने भावात्मक व मानवीय संबंधों के बारे में संशय पैदा करता है। उसे उन पर दुबारा सोच-विचार करने पर बाध्य करता है। जाहिर तौर पर स्त्री में रोष तथा प्रतिशोध की चाह हो तब भी भीतर-भीतर वह द्वंद्व की स्थिति में रहती है। अपनी योग्यता तथा उत्कृष्टता से उसका विश्वास न भी हटे पर साथी मर्दों पर संदेह और अविश्वास की भावना जरूर प्रबल होती है। समस्या तब और जटिल हो जाती है जब समाज में इतना भी परिवर्तन नजर न आए, जहाँ कम से कम उसके तथाकथित प्रगतिशील सदस्य बलात्कार को इज्जत लूटना न मानकर हिंसा मानने को तैयार हों।" [8] इस प्रकार लेखिका ने वहाँ के राष्ट्रपति मिलोसेविच की कूटनीतियों को सामने लाने का प्रयास किया है।

इस युद्ध में सिर्फ स्त्रियाँ ही नहीं बल्कि पुरुष और बच्चों को भी इसका परिणाम भुगतना पड़ा। उदाहरण के लिए "सैनिक शिविरों में कैदियों को आपस में अप्राकृतिक आचरण के लिए मजबूर किया जाता। इवान का कहना है कि भूखे नंगे बीमार ठठरी मात्र रह गए कैदी को दूसरे कैदी के साथ अप्राकृतिक कर्म करने के लिए मजबूर किया जाता जिसकी तस्वीरें सैनिक खींचा करते, बंदूक की नोक पर कैदियों को विवश किया जाता, 'ग्रेटर सर्बिया बनाने की दिशा में यह एक कदम था जिससे अन्तरराष्ट्रीय मीडिया को बताया जा सके कि बोस्नियाई-क्रोआती सांस्कृतिक रूप से कितने निकृष्ट हैं।" [9]

हम भारत में रहते हुए सोचते है की यूरोप देश बहुत समृद्ध है और विकसित है परन्तु लेखिका ने स्वयं इसके विपरीत अनुभव किया। वहाँ के बाजार और वहाँ के लोगों के रहन सहन की बात करते हुए वे लिखती हैं कि "यहाँ आकर देखती हूँ, बाजार है, खरीदार नहीं। बड़ी-बड़ी दुकानें, जिनमें चमड़े के जूतों की दुकानें बहुतायत में हैं, वे वीरान हैं-सामान है, सजावट भी... खरीदने वालों से निहारने वालों की संख्या कई गुना ज्यादा है। आम आदमी की क्रय-शक्ति कमजोर हो चली है। छात्र-छात्राएँ 'सेल' के मौसम की प्रतीक्षा करते हैं। पुराने कपड़ों को खूब जतन से पहनते हैं। जाग्रेब के बाहरी हिस्से में पूर्व की रेलवे लाइन के किनारे 'सेकेंड हैंड' मार्केट लगता है। मृतकों के इस्तेमाल किये हुए कपड़े, बैग, जूते, बेल्ट, चादरें, तकिये सब मिलेते हैं। अच्च्छी-अच्छी कमीजें पाँच कूना (लगभग पचास रुपये) में उपलब्ध हैं। देखती हूँ इस बाजार में खरीदारों की संख्या बहुत बड़ी है। काला, सफ़ेद और सलेटी यहाँ के प्रचलित रंग हैं। विशेषकर सर्दियों में, जो

वर्ष के लगभग सात-आठ महीने रहती हैं ।”[10] इससे लेखिका हमे वहाँ के वास्तविकता से अवगत कराती है कि वहाँ की परिस्थिति भी भारत जैसी ही है।

3.2 तथ्यात्मकता

हिंदी साहित्य के इस विधा में अगर तथ्यात्मकता नहीं है तो वह कृति सफल नहीं कहलाएगी क्योंकि यात्रा-वृत्तांत एक ऐसे विधा है जहाँ हर एक जगह पर लेखक को तथ्यों के साथ उस स्थान लोगों घटनाओं या वस्तुओं की जानकारी देनी पड़ती है। गरिमा श्रीवास्तव का यह यात्रा-वृत्तांत तथ्यों के आधार पर ही रचा है क्योंकि लेखिका ने जिन स्त्रियों का युद्ध के दौरान यौन शोषण हुआ उनका साक्षात्कार लिया । उनकी कुछ बातें उन्होंने रिकॉर्ड की है। फिर उनसे बात की और जिन पीड़ित स्त्रियों से उन्होंने बात की वे खुद एक गवाह है क्योंकि जो युद्ध में स्त्रियों पर अत्याचार हो रहे थे। उन स्त्रियों ने खुद भोगे हुए त्रासदी को लेखिका के साथ साझा किया। लेखिका की दोस्त लिलियाना ने मिरसंडा नामक लड़की की आपबीती जो 1993 के ‘लॉस एंजिल्स टाइम्स’ में प्रकाशित हुई थी वह उसे मेल किया था । उसकी जुबानी इस प्रकार है। “ रोज रात को सफ़ेद चीलें हमें उठाने आतें और सुबह वापस छोड़ जातें । कभी-कभी वे बीस की तादाद में आते । वे हमारे साथ सब कुछ करते, जिसे कहा या बताया नहीं जा सकता। मैं उसे याद भी नहीं करना चाहती । हमें उनके लिए खाना पकाना और परोसना पड़ता नंगे होकर हमारे सामने ही उन्होंने कई

लड़कियों का बलात्कार कर हत्या कर दी, जिन्होंने प्रतिरोध किया, उनके स्तन काटकर धर दिए गए।" [11]

उसी प्रकार लेखिका ने वहा के इतिहास की घटनाओं का वर्णन तिथि के साथ प्रस्तुत किया है। इस प्रकार लेखिका ने यात्रा-वृत्तांत में कई सारी घटनाओं का वर्णन करते समय उन्होंने कई सारी जानकारी वहाँ के लोगों फिर कुछ संस्थाओं और समाचार पत्रों से प्राप्त की है और जिन बातों को इतिहास की किताबें में दर्ज नहीं किया उसका उन्होंने इस यात्रा-वृत्तांत में वर्णन किया है।

3.3 आत्मियता

यात्रा के दौरान जिन लोगों से लेखिका का परिचय हुआ उनसे उन्होंने दोस्ती का हाथ बढ़ाया चाहे वह हवाई जहाज में हो या क्रोएशिया, जाग्रेब आदि शहरों में उन्होंने अपने मित्रों को दावत पर बुलाया फिर उनसे आत्मियता से बात की और उनकी इसी क्षमता के कारण उन स्त्रियों ने अपने कष्ट, उनपर हुए बलात्कार, अत्याचार, यौन शोषण आदि बातों को लेखिका के साथ साझा की। और यह काम बहुत मुश्किल था। क्योंकि अपने उपर जो बीता इन बातों का खुले आम चर्चा करना कोई साधारण बात नहीं है। इसके लिए कठोर होना पड़ता है और साथ ही सामने वाले व्यक्ति पर भरोसा करना अति आवश्यक है। यात्रा के दौरान कुछ स्त्रियों को अपनी बात रखने में

हिचकिचाहट हुई परन्तु अंततः उन्होंने अपने त्रासदी को वाणी का रूप दिया। जिसके कारण आज वह बातें कई सारे लोगों तक पहुंची। जो बातें इतिहास की किताबें बताने में असमर्थ रही है। इस यात्रा-वृत्तांत में उभर कर आयी है लेखिका के इसी गुण से इसी यात्रा-वृत्तांत अधिक विश्वसनीय भावात्मक एवं कलात्मक बन गया है।

3.4 पात्र एवं चरित्रांकन

यात्रा-वृत्तांत पात्रों के बिना अधूरा है। दरअसल ज्यादातर यात्रा-वृत्तांत में मुख्य पात्र तो स्वयं लेखक ही होता है। और वो यहाँ के संस्कृति, समाज, इतिहास, प्रकृति आदि का वर्णन करता है। और जो पात्र हैं वो गौण रूप में दिखाई देते हैं पर यह यात्रा वृतांत चरित्र प्रधान है। यहाँ पात्रों के आख्यानों को लेकर ही विषयवस्तु बुनी है। जिसकी वजह से यह यात्रा-वृत्तांत बाकी यात्रा-वृत्तांतों से अलग है। इन पात्रों के कारण इस यात्रा-वृत्तांत में सजीवता आती है। उदाहरण के लिये जब लेखिका की मुलाकात एनिसा नामक लड़की से हुई थी। जिसने इस युद्ध के अपार कष्ट को झेला था। जहाँ उसने अपने दादा दादी और उसके पिता का कत्ल अपने आँखों से देखा था। सब सर्ब सैनिक घर में घुसकर जो लड़की, औरत उन्हें पसंद है उसे उठाकर ले जाते थे। उसके छिपने या भागने की कोशिश व्यर्थ थी। वो कहती हैं कि उसके धमकाने पर मैं निर्वस्त्र हो गई मेरी आँखें बंद थी। उसने मुझे धक्का देकर गिरा दिया और अकथनीय प्रताड़ना का सिलसिला शुरू हुआ। रोने चिल्लाने का कोई अवसर नहीं था। वह सैनिक बाहर जाकर और दो सैनिकों को बुला लाया।

उन दोनों ने पहले वालों का अनुकरण किया। मैं अचेतन हो गई… मैं अब तक वहाँ अकेली खून के तालाब में लेटी रहीं मालूम नहीं माँ कब आयी ढूँढती हुई मालूम नहीं मेरे शरीर पर कोई वस्त्र नहीं मैं निर्वस्त्र नीसंहाय घायल और अपमानित महसूस कर रही थी ।[12]

इस प्रकार की घटनाओं के कारण लड़कियां खुद पर प्रश्न करने लगी कि यह सब मेरे साथ ही क्यों हुआ क्यों मैनें जन्म लिया । कहीं लड़कियों ने इन सब के लिए खुद को जिम्मेदार ठहराया कुछ स्त्रियों ने माँ बनने का अधिकार खोया, फिर कहीयों ने आत्महत्या की और ऐनेसा जैसी स्त्रियाँ 'पोस्ट ट्रॉमैटिक डिसॉर्डर' से जूझती रही। जो औरतें शहरों में थीं उन्होंने मनोवैज्ञानिक की मदद ली और खुद काउंसलर के पास जाकर इससे बाहर निकलीं । पर जो स्त्रियां गांव में थी उनके पास यह सुविधा नहीं पहुँच पायी । यात्रा के दौरान लेखिका का कई सारी औरतों से सामना हुआ जो इस प्रकार की घटनाओं के बाद उससे उभर कर नहीं आयी और उनका मानसिक संतुलन बिगड़ गया । लेखिका ने ऐसे भी पात्रों का चित्रण किया है जिन्होंने इन सारी घटनाओं को झेलने के बावजूद भी जीवन की नए सिरे से शुरुआत की । उदा. रूपिया, स्नेजाना, मरिया जिन्होंने मिलकर 'फ्रेजरस्की सैलून' खोले । नीसा जिसने पागल होने का नाटक करके उन यातना शिविरों से भाग गयी । औरफिर उसने औरतो, बच्चो, मर्दों की पिटाई की त्रासदी की कहानियाँ लिखीं । कइयों ने इस दर्दनाक स्थिति इसे बाहर निकलकर जीवन में कुछ करने का ठान लिया वह काबिले तारीफ है जो बाकी पीड़ित औरतों और दुनिया को एक नए सिरे से जीवन की शुरुआत करने का

संदेश है। लेखिका इन पात्रों के द्वारा यह बताना चाहती है कि अगर हमारे साथ कोई बुरी घटना हुई है तो हमें उससे उबरकर आना है तभी हम बाकियों के लिए एक मिसाल बन सकते है।

लेखिका इन पात्रों के संदर्भ में एक आख्यान में कहती हैं कि उनमें से कई सारी स्त्रियां ऐसी थीं जिन्होंने नाम छिपाने की शर्त पर ही उन्हें अपने त्रासदी के बारे में बताया। इसलिए उन्होंने कुछ पात्रो के नाम बदल दिए हैं। ताकि उनकी जो मित्रता थी वो कायम रहे , उन स्त्रियों की इज्जत बनी रहे ओर उनके व्यक्तित्व को कोई हानि न पहुंचे। लेखिका के पात्र योजना पर ध्यान दें तो उन्होंने वहाँ के परिवेश को ध्यान में रखते हुए नाम दिए हैं फिर उनके नाम काल्पनिक क्यों न हो पर जो पात्र हैं वह असली है।

3.5 रोचकता

इस यात्रा-वृत्तांत में आये उन उद्धरणों और कविताओं की वजह से रोचकता बड़ी है। जिससे यह यात्रा-वृत्तांत कलात्मक और प्रभावशाली बन गया है लेखिका ने बीच बीच में सुप्रसिद्ध कवियों के पंक्तियों को प्रस्तुत किया है। जैसे मुक्तिबोध, वर्ड्सवर्थ की 'डेफोडिल्स', विश्लावा शिमबोस्की की कविता 'वियतनाम' जिसका अनुवाद अपर्णा मनोज ने किया है, टैगोर के गीत, कविताओं के कुछ अंश फिर इवान गोन कोवाविच की कविता जो उनकी द्वितीय विश्वयुद्ध के दौरान उत्पीड़न की इंतिहा को बयान करती है। कविता :-

"दिन की रोशनी और रात के अंधियारे में खून ही खून है

रात की नियति मेरे गालों पर टाँक दी गयी है

देखता हूँ अब सिर्फ़ मन की आँख से

आँख के कोटरों से आँसू नहीं, निकलती है आग

मेरा दिमाग है बेचैन-रुद्ध है साँस

जबकि मेरी चमकीली-पनीली कौतुकी भोली आँखें मर रही हैं मेरी अपनी ही हथेलियों पर।"[13]

इस प्रकार लेखिका ने रोचक ढंग से इस यात्रा-वृत्तांत को पाठकों के समक्ष रखा है।

3.6 उद्देश्य

यूरोपीय देशों के स्त्रियों को लेकर जो हमारी धारणा है कि, वहाँ स्त्रियाँ सुरक्षित है और हम बहुत पिछड़े हुए हैं। तो वैसा नहीं है बल्कि हमने उन्हें ठीक से जानने की कोशिश ही नहीं की। जो 1992 से 1995 तक वहाँ युद्ध हुए उनमें सर्बियाई सैनिकों ने वहाँ के औरतों पर सरेआम सामूहिक बलात्कार किये, कई सारी बच्चियां यौन प्रताड़ना का शिकार हुईं। परिवारों के परिवार खत्म हुए कई सारी औरतों ने इससे बचने के लिए आत्महत्या की या कुछ औरतों को जबरन वैश्या वृत्ति में ढकेला गया। लेखिका ने इन पीड़ित औरतों फिर एनजीओ की उद्देश् इनके साक्षात्कार लिए और इसका उन्होंने अपने यात्रा-वृत्तांत में वर्णन किया। और इतिहासकार इस प्रकार की आख्यानों को

लेकर इतिहास नहीं रचता इसके संदर्भ मे लेखिका को एक आख्यानों में प्रश्न पूछा था कि क्या हम आपकी इस किताब को इतिहास का दर्जा दे या फिक्शन का? तो लेखिका कहती हैं कि “मैं इसे इतिहास दर्जा दूंगी क्योंकि फिलिप होनार नाम के एक साउथ अफ्रीकन इतिहासकार ने कहा है कि आज के समय में जो इतिहास विजयी जाति ने लिखा है वो इतिहास पूर्ण नहीं है। बिना ऐसे लोगों के आख्यानों को जिनके बारे में वो खुद नहीं लिख सके उन आख्यानों को इतिहास में शामिल किए बिना इतिहास मुकम्मल नहीं हो सकता। ” [13] ना तो लेखिका हम यह सोचने के लिए मजबूर करती है कि क्या हमें इतिहास की पुस्तकों पर विश्वास करना है या नहीं। युद्ध कहीं भी हो पर उसमें मारी तो स्त्री ही जाती है और इस युद्ध की विभीषिका को उन औरतों की पीड़ा को उन्होंने दुनिया के सामने लाने का प्रयत्न किया है। उन्होंने यह बताने का प्रयास किया है कि हमारा जीवन उस हिमखंड की तरह है जो हमें ऊपर से अच्छा दिखता है पर उसकी गहराइयों का हम कोई अंदाजा नहीं लगा सकते और उसे देखने की भी किसी में रुचि नहीं रहती। ऐसी ही हालत उन युद्ध पीड़ित स्त्रियों की हुई थी जिसे लेखिका ने सामने लाने की कोशिश की है। इस अपमानजनक संसार को हमारे सामने लाने का प्रयास किया है। वहीं पर्यावरण प्रदूषण से बचने के लिए जो विदेशों में सुविधा दी गई है उसे हमें अपनाने का संदेश दिया है। जैसे जब लेखिका सिएत्नासेत्सा में रहती थी वहाँ गन्दगी का सामान इकट्ठा करने की या कूड़ेदान की जो व्यवस्था की है उससे वे बहुत संतुष्ट और आकर्षित हुई थी। जो हमारे देश में देखने को नहीं मिलता है। वे कहती हैं कि “ ‘सिएत्नासेत्सा’ और सभी बहुमंजिली इमारतों के पिछवाड़े कतार में लोहे के पहियेदार कंटेनर रखे हुए हैं। ये कूड़ेदान हैं। नगर निगम शहर के रख-रखाव के लिए नागरिकों से टैक्स वसूलता है। जिसके निवेश में व्यवस्था और ईमानदारी दोनों हैं। भारत के किसी भी शहर में,

जिसका अभाव सिरे से महसूस किया जाता है। अलस्सुबह बड़े ट्रकों में पिछले दिन का कूड़ा खाली कर दिया जाता है। खाली कंटेनर दिन भर पेट भरने के इंतजार में वहीं खड़े रहते हैं। जिन पर क्रोआती में सूखे और गीले अवशिष्ट पदार्थों के संदर्भ में निर्देश लिखे हुए हैं।"[14] भारत में भी ऐसी व्यवस्था है परंतु अभी तक लोगों में खासकर ग्रामीण जगहों पर इसे लेकर उतनी जागरूकता नहीं है। जितनी शहरों में पाई जाती है इसलिए हमें दूसरे देशों से जो पर्यावरण प्रदूषण से बचने के लिए व्यवस्था बनाई जाती है उसे अपनाना चाहिए ताकि प्रदूषण कम हो।

निष्कर्ष

क्रोएशियाई पर्यटन और वहाँ के शराब बनाने की प्राचीन प्रक्रिया के साथ ही वहाँ के मांसाहारी भोजन के लिए पूरे यूरोप में प्रसिद्ध है। लेखिका को उन युद्ध पीड़ित स्त्रियों से मिलकर लगा कि जीवन वही नहीं है जो हमें दिखाई देता है जीवन के भीतर उनकी बहुत सारी परथे होती है जिसे कोई देखता तक नहीं और कोई दिखाना भी नहीं चाहता। ऐसे ही एक कड़वे सच और इतिहास को लेखिका ने दुनिया के सामने लाने का प्रयास किया है और वहाँ के युद्ध पीड़ित स्त्रियों, बच्चों और पुरुषों का दुख हम इतिहास के किताबों में नहीं देख सकते उसे हम इस यात्रा-वृत्तांत में पाते हैं उपरयुक्त विवेचन से यह बात सामने आती है युद्ध एक विघटनकारी प्रक्रिया है। जिससे विध्वंस होता है। और इसका परिणाम आम जनता को भुगतना पड़ता है खासकर स्त्री वर्ग पर इसका भयावह परिणाम हमें देखने को मिलता है। जहाँ वे सामाजिक, आर्थिक एवं मानसिक तीनों स्तरों

पर टूट सी जाती है अतः यह कहना गलत नहीं होगा कि युद्ध के दौरान स्त्री का जीवन स्वयं एक युद्ध बन जाता है।

संदर्भ सूची :

1. श्रीवास्तव गरिमा, देह ही देश, राजपाल एण्ड सन्ज़ दिल्ली, प्रथम संस्करण 2017 पृ.24,25
2. वही पृ.180
3. वही पृ. 28
4. वही पृ.125
5. वही पृ. 80
6. वही पृ. 35
7. वही पृ. 182
8. गर्ग मृदुला, आजकल पत्रिका, मार्च 2014 पृ.17
9. श्रीवास्तव गरिमा, देह ही देश, राजपाल एण्ड सन्ज़ दिल्ली, प्रथम संस्करण 2017 पृ.131
10. वही पृ.36
11. वही पृ. 61
12. वही पृ. 110, 111
13. वही पृ. 71
14. वही पृ. 37

चतुर्थ अध्याय

‘बुद्ध का कमण्डल लद्दाख़’ का तात्त्विक विश्लेषण

चतुर्थ अध्याय

'बुद्ध का कमण्डल लद्दाख़' का तात्त्विक विश्लेषण

सुप्रसिद्ध लेखिका कृष्णा सोबती द्वारा रचित यह यात्रा-वृत्तांत लद्दाख के अद्भुत और अविस्मरणीय प्रकृति, वहाँ की संस्कृति का दर्शन कराता है। यात्रा-वृतांतों के कुछ तत्वों के आधार पर वहाँ के लोगों, संस्कृति, वहाँ की अनुपम प्रकृति, तीज त्योहार को समझने का प्रयास किया है ।

4.1 स्थानीयता

लद्दाख़ एक ऐसी जगह है जो बाकी पर्वतीय स्थलों से बिल्कुल अलग है वहाँ हमें प्रकृति के कुछ ही रंग देखने होयेगा को मिलते हैं। जैसे नीले, पीलें,श्वेत, लाल और हरा रंग कम से कम देखने को मिलता है क्योंकि लद्दाख़ के पूर्व में जो पर्वत श्रृंखलाएं है जैसा जंस्कार, नुब्रा घाटी, काराकोरम आदि। यह सब पर्वत ऊंचे होने के कारण बारिश के बादलों को लद्दाख़ में घुसने से रोक देते हैं इस कारण यहाँ वर्षा हमें कम मात्रा में दिखाई देती है। और इसका परिणाम वहाँ के खान-पान पर भी दिखाई देता है। वहाँ बारिश कम होने के कारण सब्जियां वगैरह नहीं उगा सकते जिसकी वजह से उन्हें मांस,सूप, नूडल्स इन पदार्थों पर निर्भर रहना पड़ता है। लेखिका जब बाजार में शॉपिंग के लिए जाती है तब उनकी नजर एक ढाबे पर चली जाती है जहाँ खुले मैं मैदा गुदा जा

रहा था। वहाँ उन्हें तंदूर बी दिखाई देता है। वहाँ उन्हें धूप में सुखाए गए मांस का सूप, ब्रोथ नूडल्स भी दिख जाते हैं। यह सब देखकर लेखिका चौंक जाती है, क्योंकि वहाँ ज्यादातर बौद्ध धर्म के लोग रहते हैं। और वे ज्यादातर मांसाहारी खाना नहीं खाते है। पर बौद्ध धर्म में भी तीन प्रकार हैं महायान, थेरावद और वज्रयान। और लद्दाख में वज्रयान और महायान सम्प्रदाय के बौद्ध अनुयायी हैं। और इन तीनों संप्रदायों की भोजन संस्कृति एक दूसरे से अलग है और वह हर एक स्थान, प्रदेशों में भिन्न-भिन्न दिखाई देती है।

बौद्ध विहार के लामा का चित्रण करते हुए लेखिका कहती हैं कि " लामा लाल-पीला गुन्छा पहनते हैं। गुन्छा का लम्बा घेर लाल पेटी से बँधा रहता है। पाँवों में लाल रंग के ऊन से बुने जूते पहने रहते हैं। यह टाँगों के ऊपर तक ढके रहते हैं। यही सर्दी में पाँव गर्म रखते हैं। "[1] जो वहाँ का भौगोलिक वातावरण है उसी के हिसाब से उनका पहनावा भी है। वहाँ मौसम ठंडा रहने के कारण वे लोग स्वेटर, मोजे, टोपियां, शॉल, जूते आदि पहनते हैं। यह सब उन्हें शरीर को गर्म रखने के लिए काम आता है ओर वहाँ की दुकानों में भी ऐसी ही कपड़े मिलते हैं। लेखिका ने वहाँ के बाजार में " एक लद्दाखी युवक के हाथ में कुछ चित्र देखे। स्थानीय चित्रकारों द्वारा अंकित। अंकन खासा बढ़िया मगर कागज जरा पतला। दो-तीन बार ध्यान से देखे। दाम पूछे। पाँच रुपए का एक। मैंने लेने का मन बना लिया था, वह दस भी कहते तो मैं लेती। "[2] इससे यह ज्ञात होता है कि वहाँ पेंटिंग की कीमत बहुत सस्ती हैं बाकी देशों में पेंटिंग बहुत ज्यादा मेहेंगी होते हैं। हो सकता है कि लोगों को उसकी चाह नहीं हो पर लेखिका को उन पेंटिंग की हैसियत मालूम थी इसीलिए उन्होंने सभी चित्रों को खरीदा वह भी बिना मोल भाव किये। और ऐसी जो स्थानीय कलाएं हैं

वह बाहर के लोगों को बहुत पसंद आती है पर जो वहाँ के स्थानीय लोग हैं वे उन्हें उतना भाव नहीं देते हैं । हर एक क्षेत्र के अभिवादन के तरीके अलग-अलग होते हैं चाहे भाषा कोई भी हो परंतु जो भाव है वह एक ही रहता है । यात्रा के दौरान कई बच्चों और औरतों से लेखिका की पहचान होती है जो लेखिका को अपनी भाषा में अभिवादन दे रहे थे , ' जुले- जुले' जिसका सामान्य अर्थ है हैलो, थैंक यू और गुड बाय । लद्दाख़ का दैवी शक्तियों में बहुत विश्वास है क्योंकि उनके हर एक चीज़ में देवता है जैसे उनकी भाषा में भी लाह देवता का वास है। उसी प्रकार लद्दाख़ में हर नदी को एक अदृश्य शक्तियां के रूप में देखा जाता है ।

अगर लद्दाख़ के नामों की बात करें तो लद्दाख को कही सारे नामों से जाना जाता है । जैसे मारयुल (लाल धरती), मांगयुल (बहुत से लोगों का घर), की-खाछान-पा (बर्फ की धरती) इतिहासकारों और चीनी यात्रियों ने भी लद्दाख को इन्हीं नामों से संबोधित किया । तिब्बत और लद्दाख एक दूसरे से नजदीक होने के कारण वहाँ की भाषा संस्कृति का प्रभाव हमें लद्दाख पर दिखाई देता है। वहाँ के कलेण्डर की बात करे तो लेखिका के अनुसार उम्र की बातचीत चक्र 12 वर्ष का और लिखित हो तो 60 वर्ष का माना जाता है । अब वहाँ 12 वर्ष को ही चक्र में बॉटते है । और हर एक चक्र का नाम अलग-अलग होता है ।

बीयालो – चूहा वर्ष

गलेनगो-बैल वर्ष

स्टैगला-शेर वर्ष

योसलो – खरगोश वर्ष

हीपरगलो – परदार साँप वर्ष

सबरुल लो- सँपीला वर्ष

स्टालो-घोड़ा वर्ष

लुगलो-बकरी वर्ष

स्परीलो-बनमानुष वर्ष

बईलो-पक्षी वर्ष

खोईलो-कुत्ता वर्ष

फूगलो-सूअर वर्ष ” [3] उन्होंने काल की परिभाषा को जंगल जीवन से जोड़ा है हर एक चक्र को अलग-अलग जानवरों के नाम दिये हैं । जो हमारे साथ पर्यावरण का हिस्सा है लेखिका को स्थानीय लोगों से बातचीत करने के बाद पता चला कि वर्ष को इस तरह बांटने की परिपाठी उन्होंने तिब्बत से अपनायी है और यह स्वाभाविक है की क्योंकि लद्दाख और तिब्बत एक दूसरे से सीमाएं साझा करते हैं ।

लद्दाख़ की संस्कृति बी बहुत दिलचस्प है “ बचपन से लेकर मृत्यु तक के दरमियान किए जानेवाले संस्कारों को अलग-अलग नाम दिए गए हैं। बच्चे के जन्म के उपलक्ष्य में दी जानेवाली दावत को ‘टसासटोन’ कहते हैं। नामकरण पर भोज निमन्त्रण ‘मिंग टोन’ कहलाता है। विवाह के भोजन निमन्त्रण को ‘बैंगटोन’ कहते हैं। मृत्यु के बाद दिया जानेवाला भोज ‘शिडटोन’, और अस्थियाँ

चुनने के बाद का भोज 'छोरटोन' कहलाता है।"[4] यहाँ के संस्कार और संस्कृति हमारे संस्कारों से बिल्कुल अलग है क्योंकि हमारे यहाँ मृत्यु के बाद भोजन नहीं परोसा जाता , पर तेरहवीं के दिन सभी को भोजन खिलाया जाता है। इससे यह पता चलता है कि वे लोग जन्म को भी मनाते हैं और व्यक्ति की मृत्यु को भी मनाते हैं।

लद्दाख़ अपने आप में एक समृद्ध प्रांत है। जहाँ कई तरह के चीजों के लिए मशहूर है। जो बाहर देशो या राज्यों से भेजी जाती है। जैसे सुनहरी रंग की बकरियों की छाल, सूती कपड़ा, रेशम की लुंगी,शाल,जरी ब्रोकेड, पशमीना, अफीम, नील, जूती, शहद, गुड़ आदि। लद्दाख के कुछ क्षेत्रों में पहले नमक और सोना भी निकाला जाता था जिसके लिए लद्दाख दुनियाभर में प्रसिद्ध था और इसकी प्रक्रिया बहुत अनोखी है " सिन्ध किनारे की रेत से यह निकाला जाता था। दरद, बाल्टी और लद्दाखी इसे निकालना और छानना जानते थे। इसका व्यापार दूर देशों तक होता था। सिन्ध का सोना अपनी खास चमक के लिए मशहूर था। निपुण चींटीखोर चींटियों द्वारा पोली की गई मिट्टी को प्राप्त कर उसमें से सोना निकालते थे। इस काम के लिए वह चमड़े के थैले इस्तेमाल करते थे। "[5]

लद्दाख भारत का सबसे बड़ा जिला है अगर क्षेत्रीय दृष्टि से देखें तो वहाँ की आबादी देश के दूसरे जिलों से कम है। वहाँ सिर्फ तीन तहसीलें हैं, लेह, कारगिल और जन्सकार। यहाँ काजोल लेह शहर है वहाँ का तापमान बाकी शहरों से अलग है क्योंकि ले यह समुद्र से 11, 500 मीटर की ऊँचाई पर है। जिससे वहाँ के वातावरण में हमें बहुत बदलाव नजर आता है। " चट्टानें खूब तपती हैं मगर छाँह में ठंडक रहती है। अगर हम आधी छाँह और आधी धूप में खड़े हों तो हमारे बदन

का एक हिस्सा सर्द और दूसरा गर्म रहेगा। यहाँ का दिन इतना गर्म कि प्यास से गला सूखने लगे। रात इतनी सर्द कि किसी भी गरमाहट को चीर दे। रात का तापमान शून्य से नीचे और दुपहर ऐसी जैसी मैदानों में हो। पूरे वर्ष में तीन-चार बार बूँदाबाँदी और दो-तीन इंच बर्फ। आसमान यहाँ का धुला-धुला मगर गर्मी की कमी नहीं ।"[6]

लेह समुद्र तल से ऊँचाई पर होने के कारण वहाँ पानी की कमी है। जिस वजह से वहाँ ज्यादा तर रेतीली जमीन है। परंतु भगवान ने इस जमीन को ऐसा बनाया है कि वह जंगल और कम पानी के होने के बावजूद भी वहाँ तरह तरह के पशु पक्षी पाए जाते हैं जैसे कौवे, काकोल, कपोत, नीलकंठ, चिड़िया, गरूड, शिकरा, बाज, चिल आदि। लेखिका ने इस यात्रा-वृत्तांत में वहाँ के अलग-अलग जानवरों के प्रजातियों का बड़े ही रोचक ढंग से वर्णन किया है।

लेखिका ने वहाँ के भूगोल को समझने के साथ ही वहाँ के इतिहास और कैसे बौद्ध धर्म दूर देशों तक फैला इसकी जानकारी प्रदान करती है। इससे यह ज्ञात होता है कि लेखिका ने लद्दाख को बड़े ही गहराइ से समझने का प्रयास किया है वे लिखती हैं कि " लद्दाख के इतिहास में बहुत फेरबदल और आक्रमण हुए। कहा जाता है कि राजा छोवन नमगियाल लद्दाख के सुरक्षक की तरह याद किए जाते हैं। वह तिब्बती राजकुमार थे। अशोक महान ने कलिंग युद्ध के बाद बौद्ध धर्म अपनाया तो उस घटना को आज भी लद्दाख में खूब धूमधाम से मनाया जाता है। इसकी नींव लद्दाख में स्थित है। कहा जाता है कि यहीं से वह तिब्बत, बर्मा में पहुँचा। कल्पना करें उन दिनों की जब यातायात के साधन बहुत कम थे। बौद्ध धर्म कुषाण काल में यहाँ विकसित हुआ। अशोक

महान ने बहुत से प्रचारक बौद्ध धर्म का प्रचार करने को कश्मीर, अफगानिस्तान भेजे थे। बौद्धधर्म सिन्धु घाटी में भी फैला। लद्दाख से वह चीन गया।”[7]

लद्दाख के वस्तुकला की बात करें तो लद्दाख में तिब्बती वस्तुकला का प्रभाव दिखाई देता है। जो राजस्थान मैं चमक धमक वाले राजवाड़े है जो हमेशा से सजे-धजे रहते हैं और लोगों को अपनी ओर खींचते हैं वैसे लेह महल नहीं है। बल्कि यहाँ के महल की सीढियां चौड़ी,सॅकरी है। बाल्कनी पर सीढ़ियां साथ साथ कमरे में फैली हुई है। ऊपर की मंजिल पर राज्य स्तरीय अध्ययन कक्ष जो खुला, लंबा कमरा है। दो लंबे चौड़े दरवाजे सा खुला गवाक्ष और सामने से पर्वत श्रृंखलाओं की चोटियां उस धूप में चमक रही है। और यह मनमोहक दृश्य जो लेखिका को प्रकृति की रहस्यों को समझा रहा है।[8]

इस यात्रा-वृत्तांत में लेह के किले मैं काम करने के लिए जिन्हें नियुक्त किया जाता था उन्हें उनके पेशे के तहत अलग अलग नाम दिए जाते थे जैसे पुराने समय में किलो की देखभाल के लिए किलेदार नियुक्त किए जाते थे। “ किले के कमांडर लद्दाखी में ‘ खारपोन्स’ कहलाएंगे जाते। और कमांडर और गवर्नर को किलो के नाम से जाना जाता था। जैसे लेह के किलेदार ‘ लेह खारपोन्स’ इसी तरह लेह के गवर्नर ‘लेहपोन’ के नाम से जाने जाते थे। महाराज की सेनाओ के कमांडर ‘माकपोन’ पुकारे जाते थे। राजा के कोषाध्यक्ष के लिए ‘छंग-सोट’ का शब्द प्रयोग किया जाता था। राज के चीफ न्यायाधीश ‘शेकस पोन’ के नाम से जाने जाते थे और राजा का कोतवाल ‘छगसी गोबास ”[9] लद्दाख़ का राजसी शासन अन्य प्रांतों की तरह नहीं था। क्योंकि वहाँ राजसी शासन होने के बावजूद भी सभी निर्णयों में प्रजा को भी शामिल किया जाता था। कोई भी समस्या

पर हल निकालने के लिए एक समिति का गठन किया जाता था और ऐसे ही एक दस्तावेज जिसका नाम था ‘ वान – ली – ई – छिन विन’ जिसे बनाने के लिए एक संगठन बनायीं थी जिसके सदस्य इस प्रकार थे “ राजसी परिवार के 9 सदस्य, पुराग के 8 , मन्त्री और लोनपो 50, पंचायतों के सरपंच 4 ,गोम्पाओं के लामा 10, लाहसा का प्रतिनिधि 1, कश्मीर के ऊन और पशमीना व्यापारी 6 इस समिति के कुल 88 सदस्यगण और समिति के मुख्य वरिष्ठ लामा। ”[10] जिसमें उन्होंने 10 महीने में लद्दाख के हित के लिये मिलकर कानून बनाए थे।जो जनता के हित में और लद्दाख़ को समृद्ध बनाने के लिए बनाये थे। बाकी राज्यों को भी लद्दाख़ की इस शासन प्रणाली को अपनाना चाहिए और राज्य को समृद्ध और विकसित बनाने के चक्कर में हमें प्रकृति को बिना नुकसान किये ऐसे फैसले लेने है जो जनता के हित में हो ना की वहाँ के मंत्रियों के जो विकास के नाम पर आज की प्रजा को ठग रहे हैं।

लेखिका ने फियांग की यात्रा के दौरान वहाँ के प्राकृतिक और प्राचीन गोम्पाओं का आकर्षत करनेवाला दृष्य पाठकों के लिए प्रस्तुत किया है वहाँ के प्रकृतिक सौंदर्य को हमारे भारत तिरंगे के रंगों की उपमा दी है। फियांग बाकी लद्दाख की जगहों से बिल्कुल अलग है वहाँ बर्फ़ से ढके चमकीले श्वेत धवल ग्लेशियर फिर पहाड़ और साथ ही मन को प्रसन्न और प्रफुल्लित करने वाली हरित क्यारियाँ भी है। अभय मुद्रा की बुद्ध प्रतिमा जो पांच वीं सदी में निर्मित की गयी थी वो फियांग में चार चाँद लगाती है। इसके संदर्भ में लेखिका कहती हैं कि “ यह सभी स्थान सिर्फ बौद्ध धर्म के अनुयायियों के लिए ही पवित्र और महत्त्वपूर्ण नहीं – भारतीय और विश्व सैलानियों के लिए भी विशेष हैं। ”[11]

लद्दाख़ में जो भी व्यापार के लिए आते थे उनके लिए फिर यात्रियों के लिए वहाँ के शासन द्वारा उनकी जरूरतों का खास ध्यान रखा जाता था । यहाँ लेखिका के यात्रा-वृत्तांत में हमें देखने को मिलता है । वे लिखती हैं कि " लद्दाख में जिसका भी शासन रहा-व्यापारी कारवाँ के आने-जाने की सुविधा सुरक्षा होती रही। लद्दाख की शासन-प्रणाली इसकी व्यवस्था बराबर करती रही। चुंगी महसूल भरने के बाद विदेशों को जाने और वहाँ से आनेवाले दुर्गम पार पथ कारवाँओं के लिए खुले थे। राजाज्ञा के अनुसार बाहर से आनेवाले माल और खच्चरों को आगाह करने या लूटने की मनाही थी। कश्मीर, बाल्टीस्तान, तिब्बत, यारकंद से आने-जानेवाले व्यापारियों और यात्रियों के खच्चरों, घोड़ों को नियमानुसार सुरक्षा दी जाती थी ।"[12]

इस प्रकार लेखिका ने वहा के गाने, लद्दाख़ के संस्कृति, साहित्य, वहाँ की परंपरा फिर वहाँ के बौद्ध धर्म लद्दाख़ की भाषा, लद्दाख़ के अलग-अलग नाम और सबसे जरूरी वहाँ का प्राकृतिक सौंदर्य जिसका अद्भुत वर्णन किया है ।

4.2 आत्मियता

लेखिका को जंस्कार नदी से आकर्षण हुआ था उस नदी के किनारे जाने का मन हुआ था । वहाँ के उस एकांत को लेखिका महसूस करना चाहती थी । पर उनके ड्राइवर ने उन्हें नीचे जाने से रोका और गाड़ी चली गई और लेखिका का मन उदास हुआ " मैं फिर जन्सकार की ओर देखती हूँ- गहरे भाव से। देखती रहती हूँ। फिर लैंडरोवर की ओर बढ़ जाती हूँ। गाड़ी दौड़ रही है और मैं चुपचाप उस प्राचीन धारा के रुपहले मुखड़े से छूट जाने के अहसास से अपने को समझाती हूँ।

नहीं-नहीं, किसी प्रिय सम्बन्धी के हमेशा के लिए छूट जाने के अहसास के साथ आँखें मीचती हूँ फिर अचकचाकर खोल लेती हूँ। यह दृश्य भी पीछे रह जाएँगे। अगर इसी रास्ते से लौटोगी तो अँधेरे में सुनहरी और मटमैले का शेड कैसे देखोगी! ”[13] लेखिका का उस नदी से एक अटूट और आत्मीयता का नाता बन गया था। यह हमें उनके इस संवाद से पता चलता है। जरूरी नहीं है कि मनुष्य आत्मीयता का संबंध सिर्फ मनुष्य के साथ ही स्थापित करें वह कोई भी हो सकता है जैसे पशु -पक्षी ,वस्तु, वृक्ष, नदी आदि।

4.3 तथ्यात्मकता

लद्दाख के बौद्ध विहार भी इसकी प्राकृतिक सौंदर्य को बढ़ाने का कार्य करते हैं। जैसे कि वहाँ के अलग-अलग बिन्ती चित्र, अलग-अलग देवी देवताओं की मूर्तियां फिर हस्तलिखित ग्रंथ आदि ।बौद्ध धर्म यहाँ पुरातन काल से है इसका प्रमाण यह बिन्ती चित्र और ये मूर्तियां देती है । साथ ही लेखिका ने यात्रा के दौरान खींचें हुई फोटोस भी इस पुस्तक में प्रस्तुत किए हैं ।

4.4 चित्रात्मकता

यात्रा-वृत्तांत में ऐसे कहीं उदाहरण है जहाँ लेखिका ने वहाँ के स्थान ,वस्तु, प्रकृति का ऐसा वर्णन किया है । जिसे पढ़ते समय वर्णन किए गए स्थानों, प्रकृति का दृश्य अपने आप आँखों के सामने आते हैं । और इससे पाठकों के मन में उस स्थान की यात्रा करने का भी ख्याल मन में उमड़ जाता

है। लेखिका ने लद्दाख के गुजारें अंतिम क्षणों के अविस्मरणीय रात की चांदनी का वर्णन बहुत अच्छे से किया है।" खिड़की से अन्दर आती चाँदनी का प्रकाश था। इतना स्वच्छ कि ऊपर ओढ़े हुए कम्बल के अलग-अलग रंग दीखने लगे। आकाश खिड़की को घेरे है और काँच पर झुका है चाँद का मुखड़ा। " [14]

4.5 पात्र एवं चरित्रांकन

यात्रा के दौरान लेखिका का सामना ऐसी कई सारी व्यक्तियों से हुआ जिन्होंने लेखिका की मदद की फिर उन्हें लद्दाख घुमाया, जीवन जीने का अलग दृष्टिकोण उनके सामने प्रस्तुत किया। यात्रा के दौरान अलची गोंम्पा के विहार में उन मूर्तियों और चित्रों को देखने के बाद जब वे बाहर आ रही थीं तब उनकी नजर एक विदेशी दाम्पत्य पर गयी और उन्होंने उनसे जिज्ञासा से पूछा की "नत-मस्तक हुए महात्मा बुद्ध से क्या कुछ वरदान मांग रहे थे !उन्होंने बताया कि महान देव के सामने हम कोई सांसारिक इच्छा प्रकट नहीं करते। बुद्ध इच्छाओं की सीमा से बाहर स्थित है। इतना ही मांग सकते हैं कि हम इस जीवन में और अगले में भी अनेक जीवों का भला कर सके। " [15] और इन शब्दों ने उनके अंदर आस्था और दूसरों के प्रति सहानुभूति जगायी थी।

लेखिका के जो ड्राइवर थे उन्होंने लेखिका का बहुत अच्छी तरह से ध्यान रखा जब वे नदी के पास जाना चाहती थी। तब उन्होंने लेखिका को रोका उनका स्वभाव बहुत नर्म था क्योंकि जब उन्होंने गाड़ी रोकी तब लेखिका नदी के पास उन्हें बिना बताए गए पर उसके बाद वे उन पर चिल्लाए तक नहीं उन्होंने सिर्फ संजीदगी से कहा कि ' आपको वहाँ तक जाना नहीं चाहिए था

पर आप लौट आयी है यह शुक्र है’ इससे हमें यह नजर आता है कि उनकी नाराजगी में भी आत्मीयता और अपनेपन का भाव था।

बौद्ध विहार में लेखिका जब चाय की खोज में थी तब उन्हें एक औरत ने अपने घर ले जाकर चाय पिलाई बातों बातों में उन्होंने वहाँ के एक पुरातन चर्च की जानकारी लेखिका को दी थी।

कारगिल में जाते समय लेखिका को दो सहयात्री मिली। जो कश्मीर मैं पढ़ाती थी और लेह में मीटिंग के लिए जा रही थी उन्होंने करगिल के जामा मस्जिद के इतिहास से लेखिका का परिचय कराया था।

4.6 उद्देश्य

बौद्ध धर्म एक ऐसा धर्म है, जो सिर्फ अपने धर्मों के लोगों के बारे में ही नहीं सोचता बल्कि वह सर्वभौमिक शांति में विश्वास रखता है। इसी का उदाहरण है लेह की वह मस्जिद। जिसके पिछे एक लंबी कहानी है जिसका लेखिका ने अपने यात्रा-वृत्तांत में जिक्र किया है वे लिखती कि “ जो लालसा के तिब्बती राजकुमार थे नमगियाल। एक लडकी से प्रेम करते थे। तो वे उस लड़की के साथ लद्दाख़ की ओर भागे पर दुर्भाग्य से उस लडकी की रास्ते में मृत्यु हुई। और उस समय लद्दाख में बादशाह जहाँगीर का शासन था। तो राजकुमार नमगियाल ने वहाँ के शासक को हराकर वहाँ का राजपाट सम्भाला और वहाँ बुद्ध की विशाल मूर्ति स्थापित की उनका कोई पुत्र नहीं था तो उसके बाद उसके छोटे भाई जमया नमगियाल को पुरीक के राजा को छोड़कर लद्दाख के सभी

छोटे बड़े राजाओं ने शासक के रूप में स्वीकारा। फिर सर्कादो के अलीमीर और पुरीक के राजा ने मौका देखकर नमगियाल पर चढ़ाई की और उसको बंदी बनाया। फिर एक दिन अलिमीरी ने सपने में दरिया से उछालता एक शेर देखा और वह उसकी बेटी के गले जा लगा जो कि एक तंत्र की कहानी है पर उस ख्वाब के बाद उन्होंने कैद किए नमगियाल से अपने बेटी के विवाह का प्रस्ताव रखा। जिसे उसने स्वीकार किया और अपने राज्य में लौट गए और वह मस्जिद नमगियाल के बेटे ने अपनी माँ अलिमीरी के बेटी के लिए बनाई थी अतः इससे यह ज्ञात होता है कि बौद्ध धर्म दूसरे धर्मों को लेकर सहानुभूति रखता है और आत्मीयता भी इसलिए उन्होंने अलमारी की बेटी को स्वीकार ओर इससे धर्म की इज्जत रखी यही है सीमांत की बौद्ध सद्भावना का उदाहरण और सत्ता में शक्ति-शास्त्र का राजनीतिक उपाय भी। ”[15]

लेखिका ने इस यात्रा-वृत्तांत के माध्यम से बौद्ध धर्म के जो अच्छे विचार है वो हमारे जीवन में अपनाने का संदेश दिया है। तभी हम एक अच्छे इंसान बन पायेंगे। फिर लद्दाख की संस्कृति वहाँ की प्रकृति हमें कई सारे संदेश देती हैं। जैसे मनुष्य को किसी फल की अपेक्षा किए बिना निस्वार्थ भाव से काम लेना है जैसे प्रकृति हमेशा देती है। साथ ही हमारा व्यवहार भी ऐसा ही होना चाहिए उसी प्रकार लेखिका ने लद्दाख़ के प्राकृतिक एवं महात्मा बुद्ध के निस्वार्थ भाव वाले विचारों का यात्रा के दौरान हुए अनुभूतियों को अंकित किया है जिससे विश्व को इसी भूभाग से अर्जित करना चाहिए।

निष्कर्ष

कृष्णा सोबती का यह यात्रा-वृत्तांत एक बड़े उद्देश्य को लेकर लिखा गया है। जिसमें वर्णित भूभाग का इतिहास, भूगोल, साहित्य, ज्ञान, धर्म, संस्कृति सभी का विविध आयामी चित्रण मिलता है। और इसमें रचनात्मकता का विशेष महत्व है जिसप्रकार उन्होंने नदी, पहाड़ वहाँ के महल फिर रात की चांदनी का वर्णन किया है। जिसे पढ़ते समय इसका भरपूर अनुभव होता है। क्योंकि पुस्तक में जो चित्र है वो पाठकों को उनके स्थान को समझने का और लेखिका के साथ जोड़े रखता है साथ ही पाठक के मन में उस स्थान की यात्रा करने की जिज्ञासा उत्पन्न करता है। लेखिका ने जो वहाँ के दंतकथाएं फिर वहाँ का मौखिक साहित्य है ऐसा बीच-बीच में डालकर इस यात्रा-वृत्तांत की शोभा को बढ़ाया है। इस उपर्युक्त विवेचन से यह पता चलता है कि लेखिका समृद्ध लद्दाख़ के प्राकृतिक सौंदर्य की बात करती है। जो हमें प्रकृति जैसा निस्वार्थ और उदार भाव को अपनाने का संदेश देता है। फिर लेखिका ने वहाँ की भाषा, वस्तुएँ, बौद्ध धर्म, इतिहास वहाँ की संस्कृति, लोगों को समझने का प्रयत्न किया है।

संदर्भ सूची:

1. सोबती कृष्णा, बुद्ध का कमंडल लद्दाख, राजकमल प्रकाशन दिल्ली, 2012 पृ. 114
2. वही पृ.24
3. वही पृ. 105,106
4. वही पृ. 106
5. वही पृ. 118
6. वही पृ. 48
7. वही पृ. 56
8. वही पृ. 63
9. वही पृ. 66
10. वही पृ. 67
11 . वही पृ. 75
12 . वही पृ. 79
13. वही पृ. 84
14. वही पृ. 168,169
15. वही पृ. 100,101

उपसंहार

उपसंहार

इस शोध के दरमियान मैंने अनुभव किया की भारतेंदु युग में जो यात्रा साहित्य की नींव डाली गई थी वह आज आधुनिक युग में पहले की भांति और उभर कर आयी है। यात्रा साहित्य की जो परंपरा है वह बहुत लंबी है। आज इस विधा के अंतर्गत स्वतंत्र लेखन हो रहा है, और विकास के साथ-साथ अब यात्रा के उद्देश्यों में भी बदलाव आए हैं क्योंकि यात्रा-वृत्तांत का कोई एक उद्देश्य नहीं है, बल्कि बहुआयामी हैं। 21वीं सदी में स्त्रियों ने समाज द्वारा बनाए गए जंजीरों को तोड़कर यात्राएं की हैं। हाँ उन्हें कई सारी समस्याएं हुई जैसे संप्रेषण को लेकर वहाँ के खान-पान को लेकर परंतु उन्होंने इन समस्याओं का डटकर सामना किया और अपने यात्रा अनुभवों को पाठकों के सामने रखा। कई ऐसी स्त्रियों ने यात्रा साहित्य इस विधा के अंतर्गत हिंदी जगत में अपनी पहचान बनाई जैसे नासिरा शर्मा, गगन गिल, गरिमा श्रीवास्तव, अनुराधा बेनीवाल आदि इन लेखिकाओं ने यात्रा-वृत्तांत को बड़े रोचक ढंग से प्रस्तुत किया है। जैसे कुछ लेखिकाओं ने इसकी शोभा बढ़ाने के लिए कविताओं प्रसिद्ध लेखकों के उद्धरण आदि को बिच-बिच में प्रस्तुत करके यात्रा-वृत्तांत के स्वरूप को और सुंदर बनाया है। 21वीं सदी के महिलाओं की स्थिति में सुधार आने के कारण स्त्रियों ने यात्रा साहित्य में लेखन कार्य करके इसे और समृद्ध बनाने का प्रयास किया है।

‘ देह ही देश ’ का विवेचन करने के बाद यह निष्कर्ष निकलता है कि यह यात्रा-वृत्तांत एक युद्ध पीड़ित स्त्रियों के संघर्ष की इतिहास पुस्तक के समान है क्योंकि लेखिका ने क्रोएशिया और

बोस्निया में हुए झड़पों का स्त्रियों, बच्चों और पुरुषों पर जो अत्याचार हुए हैं, उन्हें तिथि सहित पाठकों के सामने रखा हैं। जिसके कारण इसे खुद लेखिका ने इतिहास का दर्जा दिया है। उन्होंने इस यात्रा-वृत्तांत के द्वारा वहाँ की राजनीति का पर्दाफाश किया है। जिन्होंने स्त्रियों के देह पर युद्ध लडे। इससे ज्ञात होता है कि युद्ध एक विघटनकारी प्रक्रिया है और इसका परिणाम हमेशा से आम जनता को भुगतना पड़ा है। इस कड़वे सच के साथ ही क्रोएशिया पर्यटन और वहाँ के खान-पान को लेकर बहुत समृद्ध है। उन्होंने शराब बनाने की प्राचीनता प्रक्रिया को अभी तक सहेजकर रखा है और वहाँ के लोगों के मन में हमारी भारतीय संस्कृति को लेकर बहुत आदर है।

कृष्णा सोबती का यात्रा-वृत्तांत ‘ बुद्ध का कमण्डल लद्दाख़ ’ का विवेचन करने के उपरान्त लद्दाख़ के अनोखे और अविस्मरणीय प्रकृति का आभास होता है। वहाँ के मौखिक साहित्य से भी हम अवगत होते हैं। साथ ही हम वहाँ के बौद्ध धर्म के मूल्यवान विचारों से परिचित होते हैं जिन्हें लेखिका हमें हमारे जीवन में लागू करने का संदेश देती है। फिर प्रकृति के माध्यम से मनुष्य को निस्वार्थ भाव से जीने का संदेश इस यात्रा-वृत्तांत से हमें मिलता है। बौद्ध धर्म विश्व शांति का प्रतीक है, आज कहीं सारे देश अपने स्वार्थ के लिए एक दूसरे से युद्ध कर रहे हैं और इसका परिणाम आम जनता भुगत रही है। आज लोगों के मानवीय मूल्य घटते नजर आ रहे हैं। उपर्युक्त विवेचन के माध्यम से यह पता चलता है कि इस युद्ध का परिणाम सिर्फ आम जनता पर होता है और देश का विध्वंस होता है। इसलिए हमें महात्मा बुद्ध द्वारा दिए गए जीवन मूल्यों को अपनाकर और इतिहास में जो हमने गलतियाँ की हैं उसे सुधारना है।

संदर्भ सूची

आधार ग्रंथ:-

1. सोबती, कृष्णा. बुध्द का कमण्डल लद्दाख़, राजकमल प्रकाशन, नयी दिल्ली पटना इलाहाबाद, पहला संस्करण 2012
2. श्रीवास्तव, गरिमा. देह ही देश, राजपाल एण्ड सन्ज़, नयी दिल्ली, प्रथम संस्करण 2017

सहायक ग्रंथ:-

1. तिवारी, विश्वमोहन. हिंदी का यात्रा साहित्य एक विहंगम दृष्टि, आलेख प्रकाशन, दिल्ली, प्रथम संस्करण 2004 पृ. (भुमिका)

2. चौधरी, स्वाति. हिंदी विदेशी – यात्रा साहित्य मे महिलाओं का योगदान, अपनी माटी, 28 अक्टूबर 2020

3. Ed. Harlod L.Smith, war and social change, Manchester university press,1986

2. H. C. DARBY, R. W. SETON-WATSON, PHYLLIS AUTY, R. G. D. LAFFAN AND STEPHEN CLISSOLD, ed. By STEPHEN CLISSOLD, A SHORT HISTORY OF YUGOSLAVIA FROM EARLY TIMES TO 1966,CAMBRIDGE AT THE UNIVERSITY PRESS,1968

3. सांकृत्यायन, त्रिपाठीआचार्य राहुल . तिब्बत में बौद्ध धर्म, श्री शिवप्रसाद गुप्त सेवा उपवन काशी https://epustakalay.com/book/149529-tibbat-men-bauddh-dharm-by-rahul-sankrityayan/

4. सांकृत्यायन, राहुल. घुम्मकड़ शास्त्र, किताब महल इलाहाबाद, संस्करण 1992

5. SIR ELOT, CHARLES. HINDUISM AND BUDDHISM AN HISTORICAL SKETCH, BARNES & NOBLE Inc. NEW YORK PUBLISHERS AND BOOKSELLERS SINCE 1873

6. Hazra, Kanai Lal. Buddhism in India as Described by the Chinese Pilgrims AD 399-689, Munshiram Manoharlal Publishers Pvt. Ltd., 2002

पत्रिकाएं

1. श्रीवास्तव, गरिमा. अपराजिताओं के देश में – 3, हंस पत्रिका, अंक 10, मई 2017

2. श्रीवास्तव, गरिमा. अपराजिताओं के देश में – 5, हंस पत्रिका, अंक 12, जुलाई 2017

3. गर्ग , मृदुला. आजकल पत्रिका, मार्च 2014 पृ.17

साक्षात्कार

- https://youtu.be/jxRm_EKxBGI?si=07bKdhulYIZARPd7

  गिल, गगन. प्रयाग शुक्ल द्वारा, प्रसार भारती, 10/10/2020

- https://youtu.be/TDbSdgoUA70?si=eCe-eWlDVncDEV0w

  गिल, गगन. नीलम शर्मा द्वारा, डी.डी न्यूज़, 20/09/2016

- https://youtu.be/Ccm1X9M8Y7Y?si=YElhy1rSYT1_oX4Y

  गिल, गगन. अंजुम शर्मा द्वारा, हिन्दवी, 06/01/2023

- https://youtu.be/zWjXw6M0SVg?si=2_tsfsKkDabuEk41

  शर्मा, नासिरा. अंजुम शर्मा द्वारा, हिन्दवी, 05/05/2023

- https://youtu.be/Y9-Op_UfxT4?si=_kK_OQ35avDA61zl

  शर्मा, नासिरा. समीना द्वारा, सनसद टि.वी, 05/10/2015

- https://youtu.be/6i5BHpp_ApI?si=vloFQKu7ArcPuSJR

  शर्मा, नासिरा. जय प्रकाश पाण्डेय द्वारा, साहित्य तक, 05/01/2022

- https://www.youtube.com/live/oooAVrrfDFA?feature=shared

  शर्मा, नासिरा. तसनीम, राजिव कुमार शुक्ल, कृष्णा कल्पित द्वारा वाणी प्रकाशन ग्रुप, 01/08/2022

शोध उपाधि हेतु पूर्ण किए गए शोध कार्य

1. **नायक, सृतिलेखा. हिंदी के चयनित यात्रा वृतांतों का आलोचनात्मक अध्ययन गंगाधर मेहर विश्वविद्यालय, शोध गंगा, 2021**

   https://shodhganga.inflibnet.ac.in:8443/jspui/handle/10603/354942
2. **आर ऐ, राजी. हिंदी साहित्य के यात्रा वृत्त एक मूल्यांकन , विश्वविद्यालय केरल , शोध गंगा, 2014**

   https://shodhganga.inflibnet.ac.in/handle/10603/393996
3. **मीणा, छोटू राम. कृष्णनाथ के यात्रा वृतांतों का सामाजिक सांस्कृतिक अध्ययन, दिल्ली विश्वविद्यालय, शोध गंगा,2018**

   https://shodhganga.inflibnet.ac.in/handle/10603/370827
4. **सुंडा,ओमप्रकाश. यात्रा साहित्य: स्वरूप एवं तत्व, राजस्थान केंद्रीय विश्वविद्यालय अजमेर**

   https://vishwahindijan.blogspot.com/2019/06/blog-post.html?m=1
5. **कुमार, लोकेश. हिंदी यात्रा तत्व का आलोचनात्मक अध्ययन , हैदराबाद विश्वविद्यालय, शोध गंगा, 2020**

https://shodhganga.inflibnet.ac.in:8443/jspui/handle/10603/41368 8

वेबसाईट

1. https://www.scotbuzz.org/2020/11/madhu-kankariya-ka-jeevan-parichay.html?m=1https://www.amarujala.com/kavya/halchal/madhu-kankariya-gets-shrilal-shukla-smriti-iffco-sahitya-samman-2023-10-01

2. https://www.apnimaati.com/2021/11/blog-post_16.html?m=1

3. https://www.apnimaati.com/2023/03/blog-post_31.html?m=1

4.https://samalochan.com/%e0%a4%86%e0%a4%b5%e0%a4%be%e0%a5%9b%e0%a5%87%e0%a4%82-%e0%a4%9c%e0%a5%8b-%e0%a4%b8%e0%a5%81%e0%a4%a8%e0%a5%80-%e0%a4%a8%e0%a4%b9%e0%a5%80%e0%a4%82-%e0%a4%97%e0%a4%af%e0%a5%80%e0%a4%82-%e0%a4%97/

5. https://www.apnimaati.com/2016/11/blog-post_54.html?m=1

6.https://hindi.newslaundry.com/amp/story/2022%2F08%2F03%2Finterview-anuradha-beniwal-books-log-jo-mujhme-rah-gaye-azadi-mera-brand#amp_tf=From%20%251%24s&aoh=17068529896694&referrer=https%3A%2F%2Fwww.google.com

7.https://www.jagran.com/women-empowerment/for-women-and-society-in-the-21st-century-10102749.html

8.https://www.setumag.com/2021/05/Avak-by-Gagan-Gill.html?m=1

9. https://www.lehladakhtourism.com/about-ladakh/ladakh-religion.html

10. https://worldhistorycommons.org/devshirme-system#:~:text=The%20devshirme%20was%20a%20system,wall%20by%20an%20Ottoman%20official

11.https://www.lehladakhtourism.com/about-ladakh/ladakh-religion.html

ATMANIRBHAR BHARAT
SWAYAMPURNA GOA

गोंय विद्यापीठ
ताळगांव पठार,
गोंय – ४०३ २०६
फोन : +९१-८६६९६०९०४८

(Accredited by NAAC)

Goa University
Taleigao Plateau, Goa-403 206
Tel : +91-8669609048
Email : registrar@unigoa.ac.in
Website : www.unigoa.ac.in

Ref. No.: GU/LIB/ATTENDANCE CERT./2024/212 Date: 26/04/2024

TO WHOM SO EVER IT MAY CONCERN

This is to certify that Miss Saiyoni Dilip Naik, a student of Goa University, M.A. (Hindi), visited the Goa University Library for her reference work on the following dates and completed 33 Hours & 32 Minutes of research internship as a part of her M.A. dissertation.

The detailed dates and times she visited are attached herewith.

This certificate has been issued at the written request of Assistant Professor Ms. Manisha Gaude .

26/4/24

University Librarian
(Dr. Sandesh B. Dessai)

Dr. Sandesh B. Dessai
UNIVERSITY LIBRARIAN
Goa University
Taleigao - Goa.

GOA UNIVERSITY LIBRARY GOA

Sr.No.	Date	Time	Hours
	20/06/23	1:04pm to 1:49pm	45 minutes
	21/06/23	1:14pm to 1:35pm	21 minutes
	28/06/23	1:09pm to 1:45pm	36 minutes
	04/07/23	1:15pm to 1:32pm	17 minutes
	14/07/23	3:09pm to 3:15pm	6 minutes
	17/07/23	4:30pm to 4:35pm	5 minutes
	18/07/23	9:46am to 10:43am	57 minutes
	18/07/23	3:41pm to 4:15pm	34 minutes
	19/07/23	2:31pm to 3:40pm	1 hour 9minutes
	01/07/23	3:55pm to 4:19pm	24 minutes
	26/07/23	2:05pm to 2:11pm	6 minutes
	28/07/23	3:10pm to 3:15pm	5 minutes
	01/08/23	4:09pm to 5:33pm	1hour 24 minutes
	02/08/23	3:07pm to 3:25pm	18 minutes
	03/08/23	10:16am to 11:49am	1 hour 33 minutes
	03/08/23	12:07pm to 1:07pm	1 hour
	03/08/23	3:20pm to 3:55pm	35 minutes
	07/08/23	1:35pm to 2:50pm	1hour 15 minutes
	10/08/23	10:22am to 10:55am	33 minutes
	14/08/23	1:13pm to 3:20pm	2 hours 7 minutes
	18/08/23	4:25pm to 4:57pm	32 minutes
	29/08/23	4:30pm to 5:05pm	35 minutes
	30/08/23	4:15pm to 4:20pm	5 minutes
	05/09/23	5:09pm to 5:22pm	13 minutes
	06/09/23	5:05pm to 5:20pm	15 minutes
	18/09/23	12:14pm to 12:20pm	6 minutes
	03/10/23	1:25pm to 2:30pm	1 hour 5 minutes
	10/10/23	1:00pm to 1:10pm	10 minutes
	10/10/23	3:25pm to 3:56pm	31 minutes
	12/10/23	4:00pm to 4:02pm	2 minutes
	14/10/23	4:08pm to 4:57pm	49 minutes
	16/10/23	3:19pm to 5:13pm	1 hour 54 minutes

	17/10/23	3:22pm to 5:11pm	1 hour 49 minutes
	18/10/23	12:07pm to 1:58pm	1 hour 51 minutes
	21/10/23	4:45pm to 4:46pm	1 minute
	23/10/23	4:36pm to 5:12pm	36 minutes
	27/10/23	3:56pm to 4:19pm	23 minutes
	13/11/23	12:52pm to 1:11pm	19 minutes
	1/12/23	12:19pm to 12:54pm	35 minutes
	13/12/23	11:54am to 12:47pm	53 minutes
	18/12/23	11:40am to 12:00pm	20 minutes
	08/01/24	11:07am to 11:40am	33 minutes
	15/01/24	09:52am to 10:55am	1 hour 2 minutes
	24/01/24	11:43am to 11:45am	2 minutes
	31/01/24	11:48am to 11:58am	10 minutes
	14/02/24	11:14am to 1:46am	2 hours 32 minutes
	22/02/24	11:11am to 12:20pm	1 hour 9 minutes
	26/02/24	11:36am to 12:40pm	1 hour 4 minutes
	13/03/24	11:42am to 12:12pm	32 minutes
	27/03/24	01:30pm to 01:35pm	5 minutes
	10/04/24	01:00pm to 1:09pm	9 minutes
Total Hours			**33 hours 32 minutes**

Signature of the University Librarian
Dr. Sandesh B. Dessai

Signature of the Guide
Asst. Prof. Ms. Manisha Gaude

Signature of the Student
Miss Saiyoni Dilip Naik